WATER WARRIOR

रमेश गोयल - जल स्टार

जल, प्रकृति का एक ऐसा उपहार है, जिसके बिना जीवन-यापन करना असम्भव है। देश में बढ़ती जल समस्या को समाप्त करने के लिए सभी की एकजुटता और जागरूकता अतिआवश्यक है। इसलिए सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है जल संरक्षण और उसके सदुपयोग के बारे में लोगों का जागरूक होना। देश में बढ़ रहे जल संकट से निजात पाने के लिए देश के कोने-कोने से लोग जल योद्धा के रूप में आगे आ रहे हैं और भिन्न-भिन्न तरीकों से जल बचाने के लिए युद्धस्तर पर कार्य कर रहे हैं। आज हम इसी क्रम में आप का परिचय करायेंगे 'जल-स्टार रमेश गोयल' से।

पर्यायवरण और जल संरक्षण को समर्पित सिरसा, हरियाणा के जल योद्धा रमेश गोयल पेशे से एक वकील हैं। वर्ष 2008 में 60 वर्ष की आयु में रमेश गोयल ने लोगों को जल संकट से निजात दिलाने और अधिक से अधिक लोगों को जल संरक्षण एवं इसके सदुपयोग के लिए जागरूक करने के लिए शपथ ली। जल योद्धा रमेश गोयल ने देश वासियों को जल का महत्व समझाने और इसके सदुपयोग के लिए लोगों को जागरूक करने हेतु विद्यालयों और महाविद्यालयों में सम्मेलन, समाचार पत्रों, टी.वी., एफएम रेडियो, जल बचत के प्रेरक बैनर और पुस्तकों के माध्यम से मुहिम की शुरुआत की। देश की भावी पीढ़ी को जल संकट जैसी समस्याओं से निजात दिलाने के लिए रमेश गोयल विद्यालय एवं महाविद्यालयों में जाकर जल के महत्व, सदुपयोग एवं संरक्षण के लिए छात्रों को जागरूक कर जल रक्षकों का निर्माण कर रहे हैं।

जल योद्धा रमेश गोयल ने 2012 में 'जल चालीसा' लिखी, जिसका विमोचन 24 अप्रैल 2012 को किया गया। इसकी अब तक 12 संस्करणों में 60 हजार प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके साथ ही श्री रमेश गोयल **"बिन पानी सब सून"**, "क्यों और कैसे बचाएं जल" पुस्तकों के माध्यम से लोगों को जल संरक्षण और उसके सदुपयोग के लिए जागरूक करने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। रमेश गोयल ने अभी तक तकरीबन लाखों लोगों तक जल संरक्षण एवं इसकी बचत के लिए जागरूकता का सन्देश पहुंचाया है।

जल स्टार रमेश गोयल ने बताया कि जल ही जीवन है, यह जानते हुए भी हम पानी बर्बाद करते हैं। हवा, मिट्टी, पानी आदि प्रकृति की देन है, मगर इसका संरक्षण और सदुपयोग हमारा दायित्व है। एक व्यक्ति पूरे जीवन में जितना प्रदूषण फैलाता है उसे शुद्ध करने में तकरीबन 300 वृक्षों की शक्ति लगती है। एक व्यक्ति एक दिन में जितनी ऑक्सीजन ग्रहण करता है उससे 3 ऑक्सीजन सिलेंडर भरे जा सकते हैं, जिसकी अनुमानित लागत 2100 रुपये है। इस प्रकार एक व्यक्ति औसतन अपने जीवन काल में 5 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की ऑक्सीजन प्रकृति से मुफ्त में प्राप्त करता है। परंतु बदले में प्रकृति को कुछ नहीं देता। यह आवश्यक नहीं कि आप जमीनी स्तर पर जाकर जल और पर्यावरण के लिए कुछ कार्य करें। आप अपने दैनिक दिनचर्या में छोटे-छोटे बदलाव से एक बेहतर कल का निर्माण कर अपनी आने वाली पीढ़ी का जीवन खुशहाल बना सकते हैं। हर वर्ष एक पौधा लगाएं, कभी नल व्यर्थ खुला न छोड़ें, भोजन के लिए कम से कम बर्तन का प्रयोग करें आदि जैसे छोटे- छोटे कार्य अपनी दैनिक जीवनशैली में अपना कर आप भी देश के विकास में अपना योगदान दें सकते हैं।

हरियाणा के किसानों को 'डार्क जोन' से बाहर लाने की सरका

धान की बजाय दूसरी फसलों की खेती करने के लिए बनी योजना; कृषि वैज्ञानिकों व किसानों ने बताय

- हर साल 12 लाख हैक्टेयर में होती है धान की काश्त
- अब दालों, सब्जियों की खेती की ओर बढ़ सकता है किसानों का रुझान

मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर की ओर से गिरते भूजल स्तर पर अंकुश लगाने के लिए शुरू की गई 'मेरा पानी-मेरी विरासत' योजना का सकारात्मक असर नजर आने लगा है। मुख्यमंत्री मनोहर लाल की ओर से 6 मई को इस योजना का आगाज किया गया और उसके बाद कृषि विभाग की ओर से 9 मई को अधिकारिक अधिसूचना जारी कर दी गई। पिछले एक सप्ताह में ही सरकार की इस योजना को लेकर प्रदेश के हजारों किसानों का रुझान नजर आने लगा है और खास बात यह है कि इस योजना के लागू होने के बाद प्रदेश में अब तक 5.70 लाख हैक्टेयर में नरमे की काश्त की जा चुकी है।

किसान अब दाल, मक्के व सब्जी की खेती में भी दिलचस्पी दिखा रहे हैं। इस योजना के अंतर्गत पहले चरण में प्रदेश के 19 खंड शामिल किए गए हैं जिनमें भूजल की गहराई 40 मीटर से अधिक है। इनमें से खंड रतिया, सीवन, गुहला-चीका, पिपली, शाहबाद, बबैन, इस्माइलाबाद व सिरसा कुल 8 खंड ऐसे हैं जहां पर धान का रकबा सर्वाधिक है। पिछले खरीफ सीजन में इन 8 खंडों में 1 लाख 79 हजार हैक्टेयर में धान की फसल थी। इसके अलावा हरियाणा में अब 50 हॉर्स पॉवर से से अधिक मोटर कनैक्शन वाले किसान धान की फसल नहीं उगा सकेंगे। प्रदेश में जो किसान धान की बजाय नरमा, मूंग, अरहर, उड़द, मक्का, तिल व सब्जियों की काश्त करेंगे, उन्हें सरकार की ओर से 7 हजार रुपए प्रति एकड़ की

प्रति एकड़ 30 हजार रुपए सहायता दे सरकार: लाली

फतेहाबाद के प्रगतिशील किसान जयपाल सिंह लाली का कहना है कि किसान भी पानी बचाने के हक में हैं। किसान अगर धान को छोड़कर सब्जी एवं अन्य फसलें उगाते हैं तो उन्हें उचित दाम नहीं मिलता है। लॉकडाऊन में किसान पहले ही आर्थिक मंदी की चपेट में हैं। एक एकड़ में करीब 30 से 32 क्विंटल धान होता है, जबकि वैकल्पिक फसलों की इतनी पैदावार संभव नहीं है। ऐसे में सरकार को चाहिए कि फसल का तुलनात्मक आर्थिक गणित लगाते हुए धान की बजाय दूसरी फसलों पर 7 हजार रुपए प्रति एकड़ की बजाय 30 हजार रुपए प्रति एकड़ सहायता देनी चाहिए, ताकि किसानों को घाटे का सामना न करना पड़े।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सही फैसला: ढींडसा

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक एवं कुरुक्षेत्र जिला के शाहबाद के प्रगतिशील किसान डा. कुलदीप सिंह ढींडसा का कहना है कि यह एक स्वागत योग्य कदम है और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह सही फैसला है, क्योंकि भविष्य में जल की स्थिति को देखते हुए आज से ही इस योजना पर प्रभावी ढंग से कार्य करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि भूजल स्तर में सुधार के लिए उठाए गए कदम से लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि इस सीजन में यह योजना थोड़ी देरी से लागू की गई है। किसान अब तक फसल बोने को लेकर जहां धान की पनीरी तैयार कर चुका है, वहीं उसने फसल बोने को लेकर अपना माइंडसैट बना लिया है। फिर भी इस योजना से धान के रकबे में कमी आएगी और अगले वर्ष इस योजना के और अधिक बेहतर नतीजे देखने को मिलेंगे।

डार्क जोन में जा चुके हैं हरियाणा के अधिकतर खंड : गोयल

पिछले काफी समय से जल बचाने की मुहिम में लगे अधिवक्ता रमेश गोयल ने सरकार की नई योजना का स्वागत करते हुए कहा कि धान, गन्ना व तम्बाकू की खेती में अधिकतम पानी की आवश्यकता होती है और अधिक दोहन के कारण भूजल स्तर निरंतर गिरता जा रहा है। उन्होंने कहा कि हरियाणा के 119 खंडों में से अधिकतर डार्क जोन में जा चुके हैं यानी खतरनाक स्थिति में हैं और भूजल स्तर निरन्तर गिरते जाने के कारण अन्य ब्लाक भी उसी दिशा में बढ़ रहे हैं। ऐसे में सरकार की इस योजना से भूजल की स्थिति में सुधार होने की उम्मीद है।

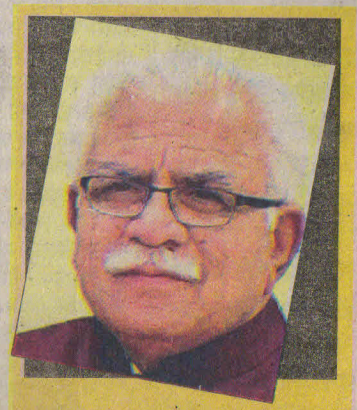

किसानों को डार्क जोन से निकालना योजना का उद्देश्य: खट्टर

मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर का कहना है कि मेरा पानी-मेरी विरासत योजना सरकार की एक ऐसी योजना है जिससे हम डार्क जोन में खेती कर रहे किसानों को इस स्थिति से उभार सकें। उनका कहना है कि हमारा उद्देश्य ये भी है किहम आने वाली पीढ़ी को जल बचाने की दिशा में एक ऐसी विरासत दें ताकि उन्हें भविष्य में जल संकट का सामना न करना पड़े। मुख्यमंत्री के अनुसार मेरा पानी-मेरी विरासत के संदर्भ में एक ऐसा पोर्टल कार्य करेगा, जिसके तहत किसान अपनी समस्याएं रख सकेंगे और उनका प्राथमिकता के आधार पर निदान किया जाएगा।

बदल जाएगी। हालांकि इस योजना के शुरूआती दौर में किसानों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, मगर बाद में यही योजना किसानों के लिए

लगातार गिर रहा भूजल स्तर बना चिंता का विषय

गौरतलब है कि हरियाणा में खरीफ सीजन में करीब 12 लाख हैक्टेयर में धान

ध्यान रखना : कोरोना से बच सकते हो, जल की कमी से नहीं : गोयल

पल पल न्यूज: सिरसा, 23 मार्च। विश्व जल दिवस (22 मार्च) पर जल के सामाजिक सरोकार के विषय में बात करते हुए पर्यावरण प्रेरणा के राष्ट्रीय अध्यक्ष व भारत विकास परिषद के पूर्व राष्ट्रीय मंत्री पर्यावरण जल स्टार रमेश गोयल ने कहा कि विश्वव्यापी जल संकट व भारत में बढ़ती जा रही पानी की कमी से आप भलीभांति परिचित हैं और यह जानते हुए भी कि जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है अधिकांश लोग जल बर्बाद करते हैं। विशेष कर जहां पानी आसानी से उपलब्ध है। जल कमी की यदि स्थिति यूंही बढ़ती रही तो आप विश्वव्यापी रोग कोरोना से बचाव की तरह घर पर रहकर अपना बचाव नहीं कर सकेंगे और बाहर भी पानी मिलना मुश्किल ही नहीं असम्भव हो जायेगा। पानी किसी मिल या फैक्टरी में नहीं बनाया जा सकता। उन्होंने कहा कि केपटाउन (साऊथ अफ्रीका की राजधानी) में पानी पर राशन कार्ड लागू होना, आस्ट्रेलिया में पानी कमी के कारण 5 हजार ऊँटों को

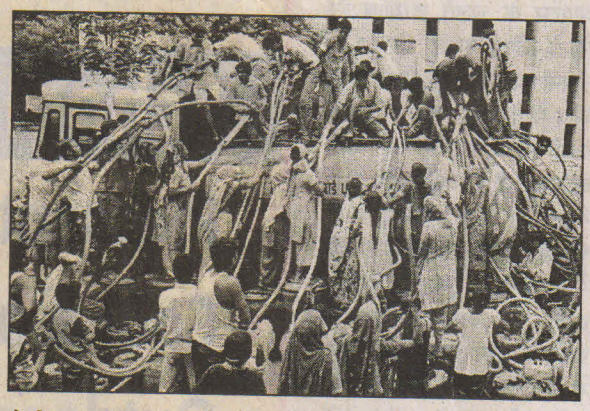

गोली मारकर हत्या कर देना बहुत बड़ी चेतावनी है। लातूर और चेन्नई में रेल टैंकरों से पानी सप्लाई करने जैसी नौबत कब आपके शहर में आ जायेगी, आप चिंतन नहीं कर रहे और जब ऐसी स्थिति आ जायेगी तब आप कैसे होंगे और क्या करेंगे जरा कल्पना अवश्य करें। और उस कल्पना को ध्यान में रखते हुए जल का प्रयोग करें ताकि आपको और भावी पीढ़ी को जल की कमी के कारण असमय व अकारण जीवन से हाथ धोना (यानी मरना) न पड़े। कोरोना से घर पर रह कर बच सकते हैं पर जल की कमी से नहीं यह अवश्य ध्यान में रखें।

उन्होंने आग्रह पूर्वक कहा कि बार बार हाथ धोने का यह अर्थ न लें कि इसी काम पर लगे रहें। हाथ यदि गन्दे नहीं हुए और अपने कुछ किया ही नहीं तो साफ हाथों को धोने की अपील नहीं की जा रही है। जल का भी ध्यान रखें।

उन्होंने देशवासियों से आह्वान किया कि अपने व अपने परिवार के साथ साथ समाज और देशहित का सदा और हर विषय में ध्यान अवश्य रखें। कोरोना को करो ना के अंदाज में उन्होंने इस प्रकार प्रस्तुत किया।

कोरोना करो ना
जीवन जीने के लिए पानी
बर्बाद करो ना ।
सुरक्षित भविष्य के लिए पानी
बर्बाद करो ना।।
पानी कमी दूर करने खातिर
जल संग्रहण करो ना।
वर्षा जल का लाभ उठाने
रिचार्ज करो ना।
तालाब कुएं बावड़ी में
वर्षाजल भरो ना।
जल कमी हो दूर ऐसे सारे
प्रयास करो ना।
अफवाहों से बचे रहो
गलत बात करो ना।
परहेज जागरूकता रखकर
कोरोना दूर करो ना।।

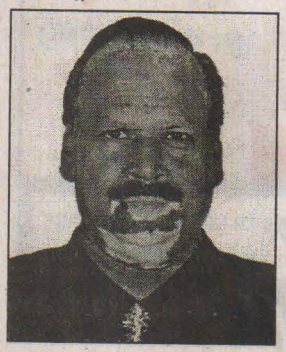

↑ 23 मार्च 2020

प्रकृति के खिलाफ कोई कार्य न करें : रमेश गोयल

पल पल न्यूज: सिरसा, 22 अप्रैल। 'माता भूमि पुत्रो अहं पृथिव्या' विश्व पृथ्वी दिवस पर शुभकामनाएं देते हुए पर्यावरणविद् व जल स्टार रमेश गोयल ने कहा कि अपनी दिनचर्या में पृथ्वी और पृथ्वी प्रदत्त संसाधनों की सुरक्षा, संवर्धन एवं संरक्षण हेतु हर वर्ष 22 अप्रैल को वैश्विक स्तर पर पृथ्वी दिवस मनाकर सकंल्प करते रहे हैं कि हम सब पृथ्वी की ऊर्जा बनाए रखने व उसके अस्तित्व को हानि नहीं पहुंचायेंगे परन्तु विकास के नाम पर ऐसे सब कार्य करते रहे हैं जिनके कारण असहनीय तापमान हो गया। सभी जीव जन्तुओं का न केवल जीना ही दूभर हो गया बल्कि हर वर्ष करोड़ों की संख्या में जीव मर रहे थे। पृथ्वी पर समय समय पर आने वाली आपदाओं भूचाल,

भूकम्प, बाढ़ व सूखा, बर्फबारी आदि को मनुष्य नजर अन्दाज कर देते थे। उन्होंने कहा कि विश्व इतिहास में पहली बार है कि मनुष्य पृथ्वी को कोई हानि पहुंचा पा रहा बल्कि उसका अपना अस्तित्व उसी के अपने निरन्तर किए जा रहे प्रकृति विपरीत कार्यों के कारण खतरे में है। उन्होंने पूर्ण मानव जाति से आग्रह एवं अनुरोध किया है कि वर्तमान लॉकडाउन से सबक सीखें और भविष्य में पृथ्वी और पृथ्वी प्रदत्त संसाधनों की रक्षार्थ प्रकृति विपरीत कोई कार्य न करने का संकल्प लें।

22 अप्रैल 2020 ←

4 जुलाई 2019

हरिभूमि
हिसार-सिरसा भूमि
रोहतक, बृहस्पतिवार, 4 जुलाई 2019

15 संबोधित करते पूर्व विधायक बलवान दौलतपुरिया

16 सप्लाई को लेकर एसडीओ से बात करते हुए

जल योद्धा : जल बचत अभियान का नाम बन गया रमेश गोयल

दिनेश शर्मा ▶▶| सिरसा

शहर के आयकर व्यवसायी रमेश गोयल एक दशक से जल बचत अभियान का नाम बन गए हैं। पर्याय है जल संरक्षण कार्य का, मिशन है जल संबंधी जन जागरण का। समाचार पत्रों में जल संकट के लेख पढ़ते हुए रमेश गोयल ने सोचा कि इस संभावित भयावह स्थिति से बचाने में देश व समाज के लिए मैं क्या कर सकता हूं और 2008 में 60 वर्ष की आयु में लग गए 'जल बचत जागरूकता अभियान' में।

करीबन 40 लाख लोगों को कर चुके हैं जागरूक

देश की लगभग 250 शिक्षण संस्थाओं व अन्य कार्यक्रमों में जाकर विद्यार्थियों, शिक्षकों व जनता को प्रत्यक्ष रूप से तथा 35-40 लाख लोगों को टीवी, रेडियो व

- दशकभर से जल संरक्षण पर कर रहे हैं काम
- ट्रेन हो या फिर बस बात सिर्फ जल बचत की

समाचार पत्रों के माध्यम से जल बचत हेतु प्रेरित कर चुके हैं। 2.5 लाख विज्ञप्तियां विद्यार्थियों व संस्थाओं के माध्यम से उनके परिवारों में वितरित कर चुके हैं। 2 गुणा 3 फुट के 700 से अधिक जल बचत प्रेरक बैनर शिक्षण संस्थानों, मंदिरों व सार्वजनिक स्थानों पर लगवा चुके हैं और निरंतर लगवाए जा रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात का अभिनंदन करते हुए जल स्टार रमेश गोयल ने कहा कि पानी की कमी विश्वव्यापी समस्या बनी हुई है और भारत में यह तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। गोयल ने कहा कि प्रधानमंत्री ने पानी की बर्बादी पर चिंता व्यक्त करते हुए जो पानी बचाने का संदेश दिया है, उसे आमजन समझे और जल संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाए।

हर जगह झलका रमेश गोयल का जलसंकटबारे दर्द

मई 2015 में हरियाणा की सामाजिक संस्था अखिल भारतीय प्रतिमा रक्षा सम्मान समिति द्वारा डायमंड आफ इंडिया अवार्ड से सम्मानित किया गया। अक्तुबर 2015 में राजस्थान की प्रतिष्ठित संस्था प्राइम टाइम इंडिया द्वारा सोशल जस्टिस बैस्ट मैन अवार्ड दिया गया। रमेश गोयल ने अपने आप को केवल अपने शहर, जिला व प्रदेश तक ही इस अभियान को लेकर सीमित नहीं रखा, बल्कि देश के जिस भी कोने में जाने का मौका मिला, जल संकट के प्रति उनका दर्द वहां भी देखने को मिला और दूसरे प्रदेशों में भी वे इस मशाल को लेकर आगे बढ़े।

हरियाणा व दिल्ली में ही घूम-घूम कर जल बचत संदेश नहीं देते बल्कि गोहाटी जाते हुए राजधानी एक्सप्रेस हो या चैन्नई जाते दुरंतो एक्सप्रेस या उज्जैन के लिए उज्जैई एक्सप्रेस, वाराणसी शिवगंगा हो या दिल्ली-सिरसा किसान एक्सप्रेस, गोहाटी-दिल्ली हवाई यात्रा हो या चेन्नई-दिल्ली, जल बचत विज्ञप्तियां व जल चालीसा बांटने में गोयल कभी भी नहीं चूकते। हरियाणा व दिल्ली के स्कूल कालेजों में ही नहीं रामेश्वरम गए वहां भी होली आइसलैंड मैट्रीकुलेशन स्कूल तथा केंद्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों को जल बचत की अनिवार्यता बताने पहुंच गए।

धुन सवार हुई तो लिख डाली जल चालीसा

आयकर व्यवसायी रमेश गोयल को जल बचत की इतनी धुन सवार हुई कि उन्होंने जल चालीसा ही लिख डाली और उनकी अब तक छः संस्करणों में 30 हजार प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं। फेसबुक पर ग्रुप शेयरिंग के माध्यम से 5 लाख से अधिक लोगों को ह्यजल चालीसाह्न भेजी और हजारों लोगों को ई-मेल की है। जल ही जीवन है को मिशन मान रहे गोयल जल बचत जागरूकता प्रचार के लिए हर समय व हर स्थान पर पहुंचने को तत्पर रहते हैं। संस्था ने जल संरक्षण के प्रति उनकी लग्न को देखते हुए 2011 में जल स्टार अवार्ड से सम्मानित किया। दिसम्बर 2011 में केंद्रीय भू-जल बोर्ड की सात सदस्यीय जिला सलाहकार कमेटी का एक मात्र गैर सरकारी सदस्य मनोनीत किया गया।

मैट्रो में भी बांट दिए 20 से ज्यादा जल चालीसा

शहर में जल स्टार के नाम से फैमस रमेश गोयल की जल संकट के प्रति आमजन को किए जा रहे जागरूकता की मशाल निरंतर आगे बढ़ रही है। रमेश गोयल ने मैट्रो में भी चलते-चलते दिल्ली में 20-22 जल चालीसा बांट दिए। गोयल का कहना है कि उन्हें इस बात की कतई झिझक नहीं है कि वे ट्रेन में दूसरे प्रदेशों में सफर करते हुए अनजान व्यक्ति को भी जल संकट के प्रति अवगत करवा रहे हैं। उनका मानना है कि किसी भी काम को आगे बढ़ाने के लिए केवल आम जनमानस को एक बार मशाल हाथ में पकड़वाने की जरूरत है फिर उसकी लौ निरंतर जलने से कोई नहीं रोक सकता।

हिसार, शुक्रवार, 6 जुलाई 2018

जागरण सिटी

दैनिक जागरण

सिरसा

समर्थन मूल्य बढ़ाना सराहनीय 14

www.jagran.com

6 जुलाई 2018

सराहनीय

सिरसा के रमेश गोयल ने जल स्टार के रूप में पूरे देश में बनाई पहचान, बिन पानी सब सून और जल चालीसा लिख कर भी किया प्रेरित

जल की जानी कीमत तो जलमित्र बनकर करने लगे जागरूक

जागरण संवाददाता, सिरसा : शहर में एक ऐसा शख्स है जो पिछले दस सालों से अधिक समय से आमजन को पानी बचाने का संदेश दे रहा है। 60 वर्ष की जिस उम्र में लोग अपने आप को रिटायर्ड घोषित कर सेवा करवाना शुरू कर देते हैं, उस उम्र में जल बचत का एक महान संदेश लेकर निकले रमेश गोयल की आज राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बन चुकी है। बेशक वे पेशे से आयकर सलाहकार है परंतु वे लोगों को आय बढ़ाने के साथ-साथ पानी बचाने का भी संदेश देते हैं।

जल स्टार रमेश गोयल कहते हैं कि वे बचपन से अखबारों व पत्रिकाओं में जल के संबंध में लेख पढ़ते थे तथा उन्हें अहसास हुआ कि वाकई अगर जल न होगा तो भयावह स्थिति हो जाएगी। वह इसी विचार को अपनाते हुए आमजन को पानी बचाने का संदेश देना शुरू किया और आज यह उनके जीवन का मिशन बन चुका है, लक्ष्य बन चुका है।

पुस्तकें लिखकर किया जागरूक

रमेश गोयल द्वारा जल बचत को लेकर रचित पुस्तक बिन पानी सब सून का विमोचन 8 मई, 2010 को हरियाणा के तत्कालीन राज्यपाल जगननाथ पहाड़िया द्वारा किया गया, जिसकी 6000 प्रतियां प्रकाशित हुई। इसके साथ ही उन्होंने हनुमान चालीसा की तर्ज पर जल चालीसा लिखी, जिसके प्रथम संस्करण का विमोचन तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेन्द्र हुड्डा द्वारा 24 अप्रैल 2012 को रोहतक में किया गया। जल चालीसा अब तक नौ संस्करणों में 45 हजार प्रतियां प्रकाशित हो चुकी है। इसके साथ इन्होंने साढ़े तीन लाख के करीब विज़प्तियां बांटकर भी जल बचत का संदेश दिया। साथ ही 1500 से अधिक बैनर, फ्लैक्स लगाकर भी आमजन को जागरूक करने का कार्य किया। अब तक देश की 350 से अधिक शिक्षण संस्थाओं व अन्य कार्यक्रमों में विभिन्न राज्यों में जाकर लाखों विद्यार्थियों, शिक्षकों व जनता को प्रत्यक्ष रूप से तथा टीवी, दूरदर्शन, रेडियो व समाचार पत्रों के माध्यम से लाखों लोगों को जल बचत के लिए प्रेरित कर चुके हैं

3000
से अधिक लोगों को बना चुके हैं जलमित्र

45
हजार प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं जल चालीसा की

2018
में सारथी जल योद्धा सम्मान से हो चुके हैं सम्मानित

रमेश गोयल एडवोकेट की जल चालीसा पुस्तक।

इस तरह चला कामयाबी का दौर

दैनिक जागरण जलदान

अपनी इस मुहिम से दूसरों को भी जोड़ने के लिए रमेश गोयल ने जल मित्र बनाए और जल मित्र योजना आरंभ कर 3000 से अधिक जल मित्र बनाएं, जिनमें प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षाविद, चिकित्सक व सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी शामिल हैं। जल बचत का संदेश देने पर रमेश गोयल को राज्य स्तर पर जल स्टार अवार्ड, डायमंड आफ इंडिया अवार्ड, सोशल जस्टिस बेस्ट मैन अवार्ड, जैम आफ इंडिया अवार्ड, श्री चित्रगुप्त सम्मान 2017, राष्ट्र रत्न अवार्ड-2018 तथा आउट स्टैंडिंग अवार्ड से सम्मानित किया है। भारत रत्न डा. अब्दुल कलाम राष्ट्र निर्माण अवार्ड के लिए चयनित हैं। विश्व जल दिवस 2018 पर सारथी जल योद्धा सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं।

रमेश गोयल एडवोकेट की पुस्तक का विमोचन करते राज्यपाल जगननाथ पहाड़िया।

8 मई 2018 मई 2008 में प्रारम्भ

जल ऊर्जा संरक्षण अभियान का एक दशक पूर्ण

पल पल न्यूज: सिरसा, 7 मई। 8 मई 2008 को विवेकानन्द वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सिरसा से स्थानीय स्तर पर जल संरक्षण अभियान का आरम्भ रमेश गोयल कर सलाहकार द्वारा किया गया जो आज एक दशक पूरा होते होते राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच गया है। साधारण से एक विचार को कार्य रूप देते देते यह एक मिशन व शेष जीवन का एक मात्र लक्ष्य बन गया है।

अब तक देश की 350 से अधिक शिक्षण संस्थाओं व अन्य कार्यक्रमों में ,हरियाणा, पंजाब, देहली, राजस्थान, तमिलनाडू, मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश आदि स्थानों पर जा-जा कर लाखों विद्यार्थियों, शिक्षकों व जनता को प्रत्यक्ष रूप से तथा 50 लाख से अधिक लोगों को टीवी, दूरदर्शन, रेडियो व समाचार पत्रों के माध्यम से जल बचत हेतु प्रेरित कर चुके हैं।

'बिन पानी सब सून' जल बचत की महत्ता पर उनके द्वारा रचित पुस्तक का विमोचन 8 मई 2010 को हरियाणा के राज्यपाल जगननाथ पहाड़िया द्वारा किया गया जिसकी 6000 प्रतियां प्रकाशित हुई। हनुमान चालीसा की तर्ज पर उन्होंने जल चालीसा लिखी जिसके प्रथम संस्करण का विमोचन हरियाणा के तत्कालीन मुख्यमन्त्री भूपेन्द्र हुड्डा द्वारा 24 अप्रैल 2012 को रोहतक में किया गया जिसकी अब तक नौ संस्करणों में जून 2017 तक 45 हजार प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं।

जल बचत के विषय को घर-परिवारों तक पहुंचाने के निमित 2008 में ए 4 साइज कागज पर एक विज्ञप्ति तैयार की और अब तक 3.4 लाख विज्ञप्तियां विद्यार्थियों व संस्थाओं के माध्यम से घर-परिवारों में पहुंचा चुके हैं। निरन्तर प्रेरणा के निमित बैनर-फ्लैक्स तैयार किये और 2 गुणा 3 फुट के 1500 से अधिक जल ऊर्जा बचत प्रेरक बैनर शिक्षण संस्थानों, व सार्वजनिक स्थानों पर लगवा चुके हैं और निरन्तर लगवाये जा रहे हैं। जल बचत संकल्प हेतु एक फार्म भरवाकर जल मित्र योजना आरम्भ की और लगभग 3000 जल मित्र बनाए हैं जिनमें प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षाविद्, चिकित्सक व सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी सम्मिलत हैं। दूरदर्शन हिसार पर जुलाई 2010 में जल संरक्षण व अप्रैल 2011 विश्व अर्थ दिवस पर ग्लोबल वार्मिंग पर 20 मिनट की परिचर्चा रिकार्डिंग व कई बार प्रसारण। मई 2012 में व 21 अप्रैल 2016 को पुनः रिकार्डिंग व कई बार प्रसारित। डीडी न्यूज पर 23 व 24 अगस्त 2015 को तथा डीडी किसान चैनल पर 21-22 अगस्त 2015 को मिशन व जल चालीसा पर चर्चा की। अन्य टीवी चैनल पर भी समय-समय पर जल बचत का संदेश दिया गया। पर्यावरण व जल संरक्षण के प्रति इसी लग्न व निष्ठा के कारण रमेश गोयल को अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक संस्था भारत विकास परिषद् द्वारा अप्रैल 2013 में राष्ट्रीय संयोजक पर्यावरण तथा 2015-16 में राष्ट्रीय मन्त्री पर्यावरण मनोनीत किया गया। वर्तमान में भी वही दायित्व निभा रहे हैं।

2007 से सिरसा में स्थापित पर्यावरण प्रेरणा संस्था को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने के लिए अप्रैल 2017 को दिल्ली में मुख्यालय स्थापित किया। पौधारोपण व वृक्ष बचाने, जल व ऊर्जा संरक्षण, प्रदूषण नियन्त्रण व स्वच्छता के निमित रमेश गोयल इस राष्ट्रीय संस्था के संस्थापक व राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं। जिसकी शाखाएं भारत के 9 राज्यों में कार्यरत हैं। प्रिन्ट व इलैक्ट्रोनिक मीडिया द्वारा सहयोग व प्रोत्साहन निरन्तर मिला। उल्लेखनीय है कि रमेश गोयल ने यह अभियान 60 वर्ष की आयु में उस समय आरंम्भ किया जब लोग अपने आपको सेवानिवृत समझते हैं। उन्होंने सिद्ध किया कि नया अभियान आरम्भ करने के लिए आयु कोई बाधा नहीं होती केवल संकल्प शक्ति होनी चाहिए। वे अनेक प्रान्त व राष्ट्र स्तरीय कार्यक्रमों में मुख्य वक्ता रहे हैं। रमेश गोयल बाल्यकाल से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से सम्बन्धित हैं और 2010 तक जनसंघ व भाजपा में अति सक्रीय रहे हैं। स्थानीय, प्रान्तीय व राष्ट्र स्तरीय 60 से अधिक संस्थाओं में सक्रीय भूमिका में रहे गोयल सामाजिक कुरीतियों के प्रबल विरोधी तथा निज पर शासन फिर अनुशासन को पूर्ण रूपेण अपनाएं हुए हैं।

23 अक्टूबर 1948 को सिरसा के एक अति साधारण वैश्य परिवार में जन्मे गोयल ने बाल्यकाल से ही संघर्षशील जीवन व दृढ़ संकल्प के सहारे कला, वाणिज्य व विधि स्नातक शिक्षा स्वयंपाठी व पत्राचार के माध्यम से पूर्ण की। आयकर बार एसोसिएशन सिरसा के संस्थापक, कई बार सचिव व अध्यक्ष रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक संस्था भारत विकास परिषद सिरसा शाखा के संस्थापक अध्यक्ष, प्रान्तीय उपाध्यक्ष व अध्यक्ष रहे तथा 2006-07 से केन्द्रीय टीम में हैं। जल बचत अभियान के लिए रमेश गोयल को 'जल स्टार अवार्ड' विभिन्न संस्थाओं द्वारा 'डायमंड आफ इंडिया अवार्ड' सोशल जस्टिस बैस्ट मैन अवार्ड, जैम आफ इंडिया अवार्ड, श्री चित्रगुप्त सम्मान 2017, राष्ट्र रत्न अवार्ड-2018 तथा आउट स्टैंडिंग अवार्ड से सम्मानित हैं। भारत रत्न डॉ. अब्दुल कलाम राष्ट्र निर्माण अवार्ड के लिए चयनित हैं। विश्व जल दिवस 2018 पर सारथी जल योद्धा सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं।

रमेश गोयल
20 आरएसडी कॉलोनी, सिरसा, 125055, हरियाणा
मो. 9416049757

सावधान 'सूख' रही धरती की 'कोख'

पंजाब केसरी 16-04-2018

❑ सिरसा में हर साल 8 से 10 फुट पानी का घट रहा स्तर ❑ शहर के अधिकांश वार्ड है डार्क जोन में

सिरसा, 15 अप्रैल (अरुण भारद्वाज): मौसम के लिहाज से सूर्य देव के तेवरों में जहां रविवार को तल्खी दिखी। वहीं मौसम विभाग ने भी साफ कर दिया है कि एकाध दिन में तापमान काफी गर्म हो सकता है और लू के थपेड़े झुलसा सकते हैं। यहां बात मौसम अथवा तापमान की नहीं बल्कि उस खास पहलू की है जो आने वाले दिनों में लोगों को पानी के लिए तरसा सकता है। जी, यही सच है क्योंकि सिरसा में जलसंकट छा सकता है और वो भी उस दौर में जब हलक को दो घूंट पीने का पानी चाहिए। सिरसा की धरती की कोख सूख रही है और पानी का स्तर दिनोंदिन घटता ही जा रहा है। यही नहीं शहरी क्षेत्रों के अधिकांश वार्ड भी डार्क जोन में हैं जहां लोगों को पीने के पानी के लिए जुझना पड़ रहा है और यह स्थिति आने वाले दिनों में और विकराल हो सकती है।

शहर के वार्ड हैं डार्क जोन में

जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग के जे.ई. कालूराम ने बताया कि शहर में वाटर सप्लाई के लिए करीब 75 ट्यूबवैल लगे हुए हैं। लेकिन साल दर साल पानी का स्तर सभी में लगभग 10 फुट नीचे जा रहा है। ये सभी वार्ड डार्क जोन में है। इस कारण शहर में 5 ट्यूबवैल फेल भी हो गए हैं।

पार्क में नल से बहता व्यर्थ पानी। (पंकज)

ये है स्थिति

जिला सिरसा में लगभग आधे हिस्से में पानी की सप्लाई नहरों पर आधारित है तो वहीं बाकी के क्षेत्रों में जन स्वास्थ्य विभाग द्वारा ट्यूबवैल के जरिए आपूर्ति किया जाता है। पिछले करीब 10 सालों से स्थिति बिगड़ती जा रही है। विभागीय जानकारों के अनुसार एक दशक पूर्व जब ट्यूबवैल का बोर करवाया जाता था तो उस समय करीब 250 से 300 फीट पर पानी मिल जाता था लेकिन 10 साल के अंतराल के दौरान पानी का स्तर घटते घटते 400 से 500 फीट हो गया है। मसलन हर वर्ष लगभग 10 फुट पानी नीचे चला गया है। यही नहीं भूजल दोहन के कारण न केवल ऐसी स्थिति बनी अपितु एक के बाद एक वार्ड ही डार्क जोन में आ गया है। शहर के 31 में से ज्यादातर वार्ड इस श्रेणी में आते हैं। बात करें सिरसा शहर की तो यहां वाटर सप्लाई के लिए 75 ट्यूबवैल लगे हुए हैं। हालांकि कुछ वार्डों में पंजुआना का प्लांट शुरू होने से इसी के जरिए वाटर सप्लाई किया जा रहा है लेकिन ज्यादातर वार्डों में ट्यूबवैल से ही सप्लाई होता है।

जहर पीने को मजबूर हैं ग्रामीण

शहर के अलावा जिले के गांवों में भी पीने के पानी को लेकर खासा संकट है मगर गर्मियों के दौरान यहां दिक्क त और ज्यादा पैदा होने वाली है। इसके अलावा कई गांवों में नहरों से पानी दिया जाता है तो नहर बंदी के दरम्यां यहां दिक्क त आ जाती है। इसके अलावा ऐलनाबाद व राजस्थान की सीमा से सटे इलाकों में भी पानी को लेकर त्राहिमाम शुरू हो जाता है। साथ ही कई गांव ऐसे हैं जहां पीने का पानी सही नहीं है। इनमें से एक गांव है बुढ़ाभाणा। इस गांव में वर्ष 2004 में 76 लाख रुपए की लागत से जलघर बनाया गया था। गांव की आबादी करीब 3 हजार है और 2 ढाणियां हैं। गांव में पेयजलापूर्ति के लिए एक ही डिग्गी है। नहर बंदी के दौरान पानी का संकट छा जाता है, ऐसे में घग्गर नदी के किनारे लगे ट्यूबवैल से पानी आपूर्ति किया जाता है। मगर दुखद पहलू ये है कि घग्गर में अक्सर पंजाब से कैमिकल वाला पानी छोड़ा जाता है और किनारे पर लगा होने के कारण यह कैमिकल वाला दूषित पानी ट्यूबवैल के पानी से मिश्रित हो जाता है लेकिन मजबूरी में लोगों को यह जहरीला पानी पीना पड़ता है।

पंजाब केसरी मंडे SPECIAL

■ बढ़ती गर्मी में पानी का गहरा सकता है संकट

■ ऐलनाबाद और राजस्थान के साथ लगे गांवों में पानी की है किल्लत

यहां फेल हुआ ट्यूबवैल

बेशक शहर में करीब 75 ट्यूबवैल लगे हुए हैं और इसमें भी कोई दोराय नहीं कि अधिकांश ट्यूबवैल डार्क जोन में हैं। इनमें से 5 ट्यूबवैल फेल हो गए हैं जिनमें रानियां गेट स्थित गली गांधी आश्रम वाला भी शामिल है। हालांकि यह ट्यूबवैल एक स्थान से बदलकर नए स्थान पर करीब 2 साल पहले ही लगाया था मगर पानी का स्तर साढ़े 400 से नीचे पहुंच गया है और पूरी तरह से फेल हो गया है। अब यह ट्यूबवैल लोगों की नजरों में नासूर बन गया है तथा यहां लोगों को पानी के लिए दूसरे वार्ड के ट्यूबवैल पर आश्रित होना पड़ रहा है।

गांवों में नहर बंदी के दौरान आती है दिक्कत

जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग के कार्यकारी अभियंता आर.के. शर्मा ने कहा कि शहर के कुछ एरिया में पंजुआना नहर से पानी सप्लाई किया जाता है। मगर गांवों में नहर बंदी के दौरान दिक्कत जरूर आ जाती है। अभी पिछले दिनों राजस्थान कनाल नहर बंद होने से भी दिक्कत आई थी। विपरीत परिस्थितियों से बचने के लिए विभाग द्वारा पंप लगवाए जाते हैं और जैनरेटर वगैरह की भी व्यवस्था की जाती है। इन्होंने माना कि राजस्थान सीमा से सटे गांव खासकर ऐलनाबाद के अधिकांश गांव डार्क जोन एरिया में है।

पानी से गाड़ी को साफ करता एक व्यक्ति। (पंकज)

जल स्टार गोयल ने 2008 में शुरू की थी पानी बचाने की मुहिम

भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री एवं जल स्टार रमेश गोयल अपने निजी स्तर पर वर्ष 2008 में पानी की बचत का संदेश लेकर निकल पड़े। उन्होंने एक ऐसी मुहिम शुरू की जिसके तहत न केवल उन्होंने जलचालीसा तैयार किया अपितु जागरूकता सामग्री लेकर वे देशभर के सैंकड़ों स्कूलों में भी पहुंचे जहां बच्चों को पानी का महत्व बताया। उन्होंने जल के संदर्भ में पुस्तक भी लिखी है और इस पुस्तक का उन्होंने उन इलाकों में किया जहां पूर्व में पानी को व्यर्थ बहाया जा रहा था। रमेश गोयल कहते हैं कि बिना जल के आने वाला कर अंधकारमय है। उन्होंने कहा कि इस धरती पर पर्यावरण और पानी बेहद जरूरी है मगर लोग पानी की कीमत को समझ नहीं पा रहे हैं और यही कारण है कि अब पानी का संकट बढ़ने लगा है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे पानी की कीमत को समझते हुए इसे बर्बाद होने से रोकें और इसकी शुरूआत वे अपने घर से ही करें ताकि दूसरों को भी प्रेरणा मिल सके।

जल संरक्षण का संदेश दे रहे हैं रमेश गोयल

पल पल न्यूज: सिरसा, 1 जनवरी। सिरसा के वरिष्ठ नागरिक पर्यावरणविद् एवं जल स्टार रमेश गोयल ने देश भर में सिरसा व हरियाणा प्रान्त का नाम रोशन किया है। पर्यावरण एवं जल संरक्षण को समर्पित गोयल ने लगभग दस वर्ष पूर्व स्थापित 'पर्यावरण प्रेरणा' संस्था को 2017 में राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया है जिसकी अब 9 प्रान्तों में इसकी शाखाएं काम कर रही हैं और महाराष्ट्र यूनिट सर्वाधिक सक्रिय है।

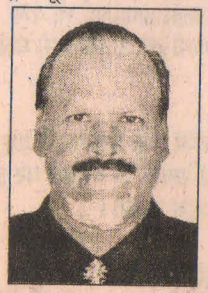

गोयल द्वारा रचित जल चालीसा जिसकी 45 हजार प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं, के माध्यम से देश के हर कोने में सिरसा का नाम पहुंचाया है। विगत वर्षों में अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित तथा 2017 में उन्हें राष्ट्र रत्न सम्मान मिला वहीं भारत रत्न डा. अब्दुल कलाम राष्ट्र निर्माण अवार्ड के लिए उनका चयन हुआ है। प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा उन्हें पूरे प्रान्त में हिन्दी सेवी सम्मान के योग्य माना गया। उन्होंने अनेक गणमान्य लोगों से भेंट करके अपने विचार व्यक्त किए। इस वर्ष दिशा टीवी, सारथी टीवी, सीपीएन न्यूज, आस्था भजन व अनेक टीवी चैनलों पर उनका साक्षात्कार व सन्देश प्रसारित किया गया। उनके द्वारा लिखित विदेश यात्रा 'एफिल टावर वाया स्विस भी 2017 में प्रकाशित हुई जिसे हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशनार्थ सहयोग राशि हेतु स्वीकृत किया गया। अप्रैल 2017 में सिरसा में उनके नेतृत्व में जल संरक्षण रैली निकाली गई वहीं उनकी प्रेरणा से अनेक स्थानों पर ऐसे आयोजन हुए। मिशन भाव से जल संरक्षण को समर्पित गोयल गत 50 वर्षों से सामाजिक कार्यों से जुड़े हैं। हरियाणा तरूण संघ के संस्थापक सदस्य व अनेक वर्ष इसके प्रधान रहे हैं और नेताजी प्रतिमा स्थापना में मुख्य भूमिका में रहे। ह. प्रा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, महाराजा अग्रसेन मेडिकल कालेज, भारत विकास परिषद जैसी अनेक संस्थाओं में राष्ट्रीय व प्रान्तीय पदाधिकारी रहे गोयल पर सिरसा ही नहीं हरियाणा को गर्व है और 2018 में और अधिक अपेक्षाएं हैं।

2/1/2018 पल पल 2

27/2/2018

प्रादेशिक

रमेश गोयल सहित तीन हस्तियों को मिला सम्मान

पल पल न्यूज: सिरसा, 27 फरवरी। शिक्षा, खेल, स्वास्थ्य, जल बचाओ व समाजसेवा के क्षेत्र में सराहनीय योगदान के लिए राह ग्रुप फाउंडेशन के तत्वावधान में बहल स्थित बीआरसीएम विद्याग्राम बहल के स्वामी विवेकानंद सभागार में जिले की तीन हस्तियों को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अध्यक्षता राह ग्रुप के चेयरमैन नरेश सेलपाड़ व बीआरसीएम एजुकेशन सोसायटी के निदेशक डा. एस. के. सिन्हा ने संयुक्त रुप से की, जबकि मुख्यअतिथि के तौर पर अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास निगम की चेयरपर्सन सुनीता दुग्गल व केश कला एवं कौशल विकास बोर्ड के चेयरमैन सुरेश सेन ने अवार्डियों को सम्मानित किया। राह ग्रुप के वाइस चेयरमैन सुरेश क्रांतिकारी व तकनीकी सलाहकार राजबीर दूहन ने बताया कि जल बचाओ, रक्तदान व दूसरे सामाजिक अभियानों में सराहनीय योगदान के

लिए एडवोकेट रमेश गोयल, बेटियों को तकनीकी तौर पर दक्ष बनाने के लिए सेवानिवृत प्राचार्य राजकपूर को विशेष रुप से अवार्ड ऑफ एक्सीलेंस से सम्मानित किया गया। इसी प्रकार ऐलनाबाद में कार्यरत फार्मासिस्ट सज्जन बंजारा को उनके स्वास्थ्य क्षेत्र में योगदान के लिए राह ग्रुप ने बेस्ट फार्मासिस्ट अवार्ड से सम्मानित किया। उल्लेखनीय है कि गोयल इससे पूर्व भी न केवल जल स्टार अवार्डी हैं बल्कि डायमंड आफ इंडिया अवार्ड, जैम आफ इंडिया अवार्ड, सोशल जस्टिस बैस्ट मैन अवार्ड, चित्रगुप्त सम्मान 2017 तथा राष्ट्र रत्न अवार्ड 2018 से विभिन्न संस्थाओं द्वारा सम्मानित किए जा चुके हैं। उनके द्वारा रचित जल चालीसा की 45 हजार प्रतियां प्रकाशित हो चुकी हैं और सोशल मीडिया, इलेक्ट्रोनिक तथा प्रिन्ट मीडिया के माध्यम से 50 लाख से अधिक लोगों तक उनका सन्देश जा चुका है।

पानी की हर बूंद बचाएंगे 'जल मित्र'

पानी की एक-एक बूंद को व्यर्थ बहने से रोकना का जिम्मा उठाए हुए हैं सिरसा के 'जल मित्र' एडवोकेट रमेश गोयल। वे पांच वर्षों से शहर में पूरे जोर-शोर से जल बचाओ अभियान चला रहे हैं। उनसे प्रेरित होकर लगभग छह हजार और जल मित्र उनके अभियान से जुड़ चुके हैं। उनके सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय रहने का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे स्वयं 60 से अधिक समाजसेवी संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। एडवोकेट गोयल ने बताया कि उन्हें जैसे ही जल बचाने का कोई अच्छा आइडिया आता है, उसके पर्चे छपवाकर जागरुकता के लिए निकल पड़ते हैं। वे सबसे पहले विद्यार्थियों को जागरूक करते हैं। इसके साथ-साथ वे पर्यावरण की सुरक्षा के लिए 'कागज बचाओ' का नारा भी बुलंद किए हुए हैं। उनका कहना है कि कागज की खपत कम होगी तो पेड़ों की कटाई भी कम होगी। इससे पर्यावरण सुरक्षा होगी। वे जनजागरुकता के लिए जल चालीसा का वितरण निशुल्क कर रहे हैं और अब तक दस हजार प्रतियां बांट चुके हैं। पानी बिन सब सून पुस्तक भी विभिन्न कार्यकर्मों में बांटी जा रही है, इसके अलावा वे देशभर में डाक से संगठनों को प्रतियां भेज रहे हैं।

इन संस्थाओं से जुड़े : पर्यावरण प्रेरणा, श्री बाल अमर समिति, हरियाणा तरुण संघ, नागरिक परिषद, साहित्य समिति, पावन शिक्षा समिति, बिक्रीकर बार संघ, आयकर बार संघ, साहित्य परिषद सिरसा, भारत विकास परिषद आदि।

दैनिक अमर उजाला 'शान-ए-हरियाणा' परिशिष्ट 8 मार्च 2014.

लापरवाही पांच हजार लोगों के हिस्से का पानी व्यर्थ बहा रहे सिरसावासी

बूंद-बूंद को तरसाएगी पानी की बर्बादी

अमर उजाला ब्यूरो

सिरसा। जनस्वास्थ्य विभाग का कहना है कि सिरसावासी प्रतिदिन 50 हजार लीटर पानी व्यर्थ बहा रहे हैं। शहर में प्रति व्यक्ति रोजाना 10 लीटर पानी दिया जा रहा है। इससे साफ है कि लोगों द्वारा बहाये जा रहे पानी से पांच हजार व्यक्तियों के लिए पानी व्यवस्था हो सकती है।

रोजाना लगभग पांच हजार व्यक्तियों के हिस्से का पानी व्यर्थ में बहाया जा रहा है। जिसे रोकने के लिए विभाग और सामाजिक संगठन अभियान चलाकर लोगों का जागरूक करते हैं। विभाग द्वारा खुला पानी बहाने व अवैध कनेक्शन मिलने पर एक हजार रुपये का जुर्माना भी किया जाता है। बार-बार लापरवाही करने वाले लोगों के खिलाफ एफआईआर भी दर्ज करवाई जा सकती है। बावजूद इसके लोगों पर विभाग की सख्ती का प्रभाव देखने को नहीं मिल रहा है। शहर में जलापूर्ति के लिए योजनाएं बनाकर उचित प्रबंध किए जा रहे हैं, लेकिन कुछ जगह

प्रतिदिन व्यर्थ बहाया जा रहा है लगभग 50 हजार लीटर पानी

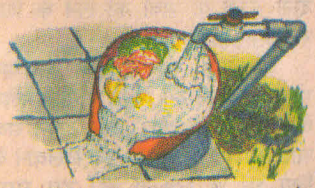

विभाग की सख्ती का भी नहीं दिख रहा प्रभाव

अभी भी जलापूर्ति की समस्या कायम है। गर्मी के दिनों में इस समस्या में ओर भी इजाफा हो जाता है। इसके बावजूद शहर में ऐसे लोग भी हैं जो नलों को खुला छोड़कर, घरों की सफाई या गाड़ियां आदि धोते समय, कच्ची जगह पर छिड़काव करते समय हजारों लीटर पानी व्यर्थ में बहा देते हैं।

जनस्वास्थय विभाग के अधिकारियों का कहना है कि शहर में ऐसे लोगों का प्रतिशत तो न के बराबर है, मगर एक अनुमान के अनुसार शहरवासी प्रतिदिन 50 हजार लीटर पानी व्यर्थ बहा रहे हैं। शहर में जलापूर्ति व्यव्स्था की बात करें तो प्रति व्यक्ति रोजाना 10 लीटर पानी दिया जाता है। इस प्रकार अनुमान लगाया जा सकता है कि व्यर्थ बहने वाले पानी से पांच हजार लोगों के लिए पानी की व्यवस्था हो सकती है। एक व्यक्ति के लिए तो पानी बहाना छोटी बात हो सकती है, मगर जब पूरे क्षेत्र के लोगों का हिसाब लगाया जाता है तो व्यर्थ बह रहे पानी की मात्रा हजारों लीटरों तक पहुंच जाती है जो बेहद चिंता का विषय है। विभाग का कहना है कि इस बारे में लोगों को समय-समय पर जागरूक भी किया जाता है। लोगों को खुले नल बंद रखने के निर्देश भी दिए जाते हैं। विभाग की ओर से सख्त कार्रवाई करते हुए ऐसे लोगों को प्रति घर एक हजार रुपये जुर्माना लगाया जाता है। बार-बार लापरवाही करने वाले का कनेक्शन काटने के साथ-साथ एफआईआर तक दर्ज की जा सकती है। इसके बाद भी लोगों की लापरवाही के कारण बड़ी मात्रा में अमूल्य जल को व्यर्थ बहाने पर प्रतिबंध नहीं लग रहा।

अभियान को नजरअंदाज कर रहे लोग

पानी को लेकर पूरे विश्व में चिंता है, इसलिए करोड़ों रुपये खर्च कर जल सरंक्षण अभियान चलाए जा रहे हैं। जनसंचार साधनों की बहुतायत के कारण जल सरंक्षण का संदेश किसी न किसी ढंग से प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंच रहा है। इसके बावजूद पानी बचाने को लेकर लोगों का सचेत न होना बेहद चिंता का विषय है। धरती पर समाप्त हो रहे पानी को लेकर हर रोज नई रिपोर्ट आ रही है, जिसमें साफ है कि कुछ सालों में पेयजल के लाले पड़ जाएंगे। - डॉ. प्रभाष

हम सब के लिए चिंता का विषय

जागृति संस्था के माध्यम से जल सरंक्षण विषय को लेकर अनेक जागरुकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। शहर में इतनी बड़ी संख्या में पानी व्यर्थ बहाया जा रहा है जो हम सब के लिए बेहद चिंता का विषय है। पूरे समाज को एकजुट होकर इसके विरुद्ध चलना होगा, तभी पानी को आने वाली पीढ़ियों तक बचाया जा सकेगा। वे शहर से इस समस्या को समाप्त करने के लिए स्वयं शहर में चक्कर लगाकर लोगों को जल सरंक्षण के प्रति जागरूक करेंगे। **रमेश गोयल, अध्यक्ष जागृति संस्था**

दैनिक अमर उजाला
12 मई 2014

पर्यावरण बचाने के लिए पौधारोपण जरूरीः गोयल

पल पल न्यूजः सिरसा, 5 जून। आज विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भारत विकास परिषद् के राष्ट्रीय संयोजक, पर्यावरणविद् व जल स्टार रमेश गोयल ने कोर्ट परिसर में पौधारोपण किया। उपायुक्त अंशज कुमार, अतिरिक्त उपायुक्त, जिला वन अधिकारी सहित अनेक अधिकारियों ने पौधारोपण करके पर्यावरण दिवस को सार्थक बनाया। गोयल ने बताया कि विडियो क्लिपिंग द्वारा फेसबुक ग्रुप शेयरिंग व ईमेल के माध्यम से देश भर के लगभग 5 लाख लोगों को पौधारोपण करने का आग्रह किया है। गोयल समय-समय पर प्रदूषण कम करने वृक्षों व पर्यावरण का महत्व तथा जल संरक्षण के विषय में अपील करते रहते हैं और अब तक लगभग दो लाख लोगों को विद्यालयों, महाविद्यालयों, कथा कीर्तन आयोजनों में जा जाकर प्रत्यक्ष रूप से इनकी आवश्यकता, महत्व व उपाय बता चुके हैं। टीवी, दूरदर्शन, रेडियो व समाचार पत्रों के माध्यम से 25-30 लाख लोगों तक यह सन्देश भेज चुके हैं। जल चालीसा के रचियता, हरियाणा प्रान्त के लिए जल स्टार अवार्डी, प्रशासन व अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित गोयल के लिए अब व्यवसाय की तुलना में पर्यावरण व जल संरक्षण मिशनरी व प्राथमिकता है।

दैनिक पल पल 6/6/2014

तमिलनाडु में

6

रामेश्वरम् के विद्यार्थीयों को बताई जल की महता

सिरसा। भारत विकास परिषद् के राष्ट्रीय पर्यावरण संयोजक व केन्द्रीय भूजल बोर्ड के जिला सलाहकार सदस्य रमेश गोयल एडवोकेट ने 11 सितम्बर 2013 को केन्द्रीय विद्यालय, रामेश्वरम् (तामिलनाडू) में विद्यार्थीयों को जल की महता, कमी के कारण, बचत की आवश्यकता व उपाय बताते हुए कहा कि समुद्र के बीच रहकर भी पीने के पानी की समस्या को समझना अधिक आवश्यक है क्योंकि समुद्र का पानी खारा है जिससे नमक बनाया जा सकता है परन्तु प्यास नहीं बुझाई जा सकती। छोटे छोटे उदाहरणों के साथ उन्होने बताया कि हम कैसे अपने दैनिक जीवन में पानी बर्बाद करते हैं और उसे कैसे बचाया जा सकता है तथा इसकी आवश्यकता क्यों है। विद्यालय प्रांगण में जल बचत सम्बन्धी गोयल द्वारा तैयार बैनर लगाया गया तथा विद्यार्थीयों को जल विद्युत बचत विज्ञप्तियां भी वितरित की गई। विद्यालय पुस्तकालय के लिए 'बिन पानी सब सून' पुस्तक तथा जल चालीसा की प्रतियां भी दी। विद्यालय प्राचार्या श्रीमती ए..शशी ने गोयल का आभार जताया कि हिन्दी पखवाड़े में हिन्दी में सामाजिक विषय पर उत्तर भारत से आकर विद्यार्थियों को प्रेरित किया। गोयल ने होली आइसलैंड लिटल फ्लावर मैट्रीकुलेशन स्कूल, रामेश्वरम् में भी विद्यार्थीयों को (अंग्रेजी में) जल बचत सम्बन्धी जानकारी दी।

समरघोष 17/9/2013

मेरा शहर हीरो

पानी बचाने के लिए चलाई मुहिम

सिरसा। न केवल शहर बल्कि देहात आदि में भी पानी की बचत के लिए क्रांतिकारी अभियान चलाने वाले शहर के अधिवक्ता रमेश गोयल आज किसी परिचय के मोहताज नहीं है क्योंकि जल बचाने के लिए उनके द्वारा किए जा अथक प्रयास स्वतः ही उन्हें जिले में एक खास पहचान दिलाए हुए है। अपने घर से लेकर सार्वजनिक स्थलों, राजकीय व गैर राजकीय स्कूलों में जल बचत का संदेश देने वाले रमेश गोयल फिलहाल एक अन्य अभियान में जुटे हुए हैं। भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय पर्यावरण संयोजक व जल स्टार का अवार्ड हासिल किए रमेश गोयल ने सामाजिक संस्था पर्यावरण प्रेरणा के तत्वावधान में गुरु पूर्णिमा के अवसर पर जल योजना आरंभ की है। इस योजना के तहत केवल एक संकल्प फार्म भरकर जिसमें भविष्य में स्वयं जल बर्बाद नहीं करेगा और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करेगा, कोई भी महिला पुरूष इसका सदस्य बन सकता है। इस दिशा में स्वयं रमेश गोयल कहते हैं कि इससे जल बचत के प्रति लोगों में जागरुकता बढ़ेगी और पानी की बर्बादी रोकने में भी सार्थक लाभ मिलेगा। रमेश गोयल ने वर्ष 2014 तक इस क्षेत्र में कम से कम दस हजार जलमित्र बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। वे अब इस दिशा में तेजी से कार्य कर रहे हैं।

रमेश गोयल।

प्रस्तुति
दिनेश कौशिक

आज समाज
8 अगस्त 2013

रामेश्वर धाम में दिया जल बचत का संदेश

पल पल न्यूज: सिरसा, 10 सितंबर। जल बचत अभियान के संस्थापक एवं भारत विकास परिषद के राष्ट्रीय संयोजक (पर्यावरण) रमेया गोयल ने दक्षिण भारत में भी जल बचत का संदेश पहुंचा दिया। गोयल रामेश्वर धाम में श्री भागवत कथा समिति अबोहर की ओर से करवाई जा रही भागवत कथा में पहुंचे हुए हैं। कथा के मंच से उन्होंने उपस्थित हजारों लोगों को जल बचत का संदेश देते हुए कहा कि यद्यपि समुंदर किनारे बैठकर जल बचत का संदेश देना बेमानी लगता है परंतु इस समुंदर का पानी खारा है जो पीने के काम नहीं आ सकता। पानी बचत की आवश्यकता के बारे में बताते हुए गोयल ने कहा कि कुछ लोग पानी का महत्व नहीं समझते और पानी को बर्बाद कर देते हैं जो भविष्य को देखते हुए अच्छा नहीं है। पानी बचत के साथ ही उन्होंने पर्यावरण तथा वैश्विक स्तर पर बढ़ते तापमान के बारे में भी लोगों को जागरूक किया। कथा में उन्होंने लगभग एक हजार से अधिक लोगों को जल चालीसा तथा जल बचत संदेश से संबंधित स्टेशनरी वितरित की। कथा में हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, कोलकाता, मुंबई सहित देश के कई भागों से लोगों ने भाग लिया।

पल पल 10 सितम्बर 2013

रेल-हवाई जहाज में बांटा जल चालीसा

सिरसा, 6 फरवरी। भारत विकास परिषद की राष्ट्रीय कार्यकारी मंडल की वार्षिक बैठक में भाग लेने के लिए गोहाटी जाते हुए परिषद् के क्षेत्रीय मन्त्री रमेश गोयल जो केन्द्रीय भूजल बोर्ड की जिला सलाहकार समिति के सदस्य हैं, ने 30 जनवरी को किसान एक्सप्रैस व 31 जनवरी को दिल्ली-डिबरूगढ़ राजधानी एक्सप्रैस में जल बचत विज्ञप्तियां व जल चालीसा यात्रियों को देकर जल बचत की अपील की। एक फरवरी को मेघालय की चेरापुंजी व शिलांग के कुछ लोगों के अतिरिक्त शिलांग एयरस्टेशन के कार्यालय में भी चालीसा दी जहां उन्होंने ऐयर म्यूजियम भी देखा। उन्होंने भारतवर्ष के कोने-कोने से आए परिषद् के लगभग 200 प्रतिनिधियों के अतिरिक्त असम प्रान्त की विभिन्न शाखाओं के लोगों को भी जल चालीसा व विज्ञप्तियां प्रदान की। सभा स्थल के अतिरिक्त सार्वजनिक स्थानों पर जल बचत प्रेरक बैनर लगवाए। 3 फरवरी को गोहाटी एयरपोर्ट पर हवाई उड़ान में प्रतिक्षारत लोगों के अतिरिक्त स्पाईसजैट की उड़ान 894 में भी यात्रियों को जल चालीसा प्रदान की। इस कार्य में भूना के जियालाल बांसल, जो भाविप के प्रान्तीय कोषाध्यक्ष हैं और दिल्ली से जाने व वापसी तक साथ थे, का विशेष सहयोग रहा। रेल यात्रा में सैनिक हवलदार कप्तान सिंह व उनके साथियों, जो देहली से अपनी छुट्टियां समाप्त कर जा रहे थे, ने गोयल के इस विशेष प्रयास की सराहना की। गोहाटी एयरपोर्ट पर दीपक जैन व हवाई जहाज में इंजीनियर दिलीप कुमार बोरजा ने न केवल गोयल के मिशन की प्रशंसा की बल्कि अपने इष्ट मित्रों के लिए चालीसा की और प्रतियां भी मांगी। 4 फरवरी को सिरसा आते हुए किसान एक्सप्रैस के एसी डिब्बे में भी यात्रियों को चालीसा व विज्ञप्तियां वितरित की। इस यात्रा में हिसार के मूल निवासी वर्तमान में हालैंड निवासी गिन्नी भार्गव ने विषय में उत्सुकता जताई और गोयल द्वारा किये जा रहे कार्यों की समीक्षा की और हालैंड जाने के बाद जल संरक्षण के विषय में और जानकारी उपलब्ध कराने तथा उनके द्वारा दी जाने वाली जानकारी को विभिन्न देशों में पहुंचाने का विश्वास दिलाया। गोयल ने 2012 में हनुमान चालीसा की तर्ज पर जल चालीसा रचकर जल संरक्षण का सन्देश पूरे देश में दिया।

दैनिक भास्कर 7 फरवरी 2013

3 मई 2013

समरघोष

सिरसा ब्रिफ

दिल्ली की प्रान्तीय कार्यशाला में जल बचत सन्देश

सिरसा। जल बचत अभियान हरियाणा के संस्थापक तथा भारत विकास परिषद् के राष्ट्रीय पर्यावरण संयोजक श्री रमेश गोयल एडवोकेट ने दिल्ली उतर प्रान्त की प्रान्तीय कार्यशाला, जिसमें प्रान्तीय तथा 26 शाखाओं के पदाधिकारियों ने भारत विकास भवन दिल्ली में भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री एस के वधवा ने की। राष्ट्रीय वितमन्त्री श्री के.एल. गुप्ता ने 'सम्पर्क' सूत्र पर विस्तृत चर्चा की वहीं श्री गोयल ने पर्यावरण व जल संरक्षण पर प्रकाश डालते हुए बताया कि एक व्यक्ति पूरे जीवन में जितना प्रदूषण फैलाता है उसे शुद्ध करने में 300 वृक्षों की शक्ति लगती है। एक व्यक्ति एक दिन में जितनी आक्सीजन लेता है उससे 3 आक्सीजन सिलेण्डर भरे जा सकते हैं जिसकी अनुमानित लागत 2100/- बनती है। इस प्रकार एक व्यक्ति अपने 65 वर्ष के जीवनकाल में 5 करोड़ से अधिक मुल्य की आक्सीजन प्रकृति से मुफ्त में प्राप्त करता है परन्तु बदले में प्रकृति को कुछ नहीं देता। प्रति वर्ष कम होते जंगल पर चिन्ता व्यक्त करते हुए श्री गोयल ने कहा कि इसी कारण प्रदूषण बढ़ रहा है जो वैश्विक तापमान बढ़ाने व जलवायु परिवर्तन का मुख्य कारण है। उन्होने कहा कि इससे वर्षा कम होती जा रही है और नदियों में जल घटता जा रहा है जो अधिक भूजल दोहन का बड़ा कारण है। भूजल स्तर का घटना जहां भूकम्प आदि का एक कारण है वहीं पानी की निरन्तर कमी से जीवन अस्त व्यस्त होता जा रहा है।

समरघोष 28/5/13

Students get tips on water conservation

TRIBUNE NEWS SERVICE

FATEHABAD, MARCH 25

Under his ongoing Jal Bachat Abhiyan, a campaign for conservation of water, Ramesh Goyal, an Income Tax counsel from Sirsa recently delivered lectures at three colleges of the Manohar Memorial Education Society and gave students tips on saving water.

"Though 71 per cent of the earth's space is covered with water, hardly one per cent of the same is worthy of drinking," said Goyal. Goyal said due to pollution and global warming rain was neither definite nor sufficient to fulfill the water demands.

He said the ground water was being pumped out ruthlessly due to which level of water had went down to 250 to 400 feet, which was just 25-30 feet a few decades ago.

He said the United Nations had declared 2013 as International Year for Water Cooperation to tackle the water crisis.

Goyal also addressed NSS volunteers during a district-level camp being organised at the MM PG College. Goyal has also authored two books, 'Bin Pani Sab Soon' and 'Jal Chalisa', on the subject.

The Tribune 26 मार्च 2014

24/2/2013

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

गरण

पिच से चिपके तेंदुलकर 12

योद्धाओं को सलाम

को सहेजने का बीड़ा

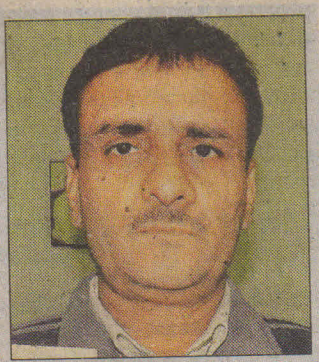

हस्ताक्षर अभियान भी

तेजपाल कुश्ती पर हस्ताक्षर अभियान चलाए हुए हैं। सबसे अहम यह कि कुश्ती की मूल भावना को न बदला जाए और सरकार इसका उत्थान करें। उनका दावा है कि कुश्ती का जनक भारत ही है। महान विजेता सिकंदर भी यहां से पहलवानों के कारण ही वापस गया था। वृत की शुरुआत भी कुश्ती से ही हुई।

सहेजने का जिक्र
तेजपाल दलाल का
ष्क में उभर आता
त के अध्यापक हैं
स को संभालने का
हुआ है।
र निवासी तेजपाल
ध्यापक है। उनका
हुआ जिसके पूर्वज
पहलवान न बन पाए
त रखने का प्रयास
का बखूबी अहसास
श्ती का उद्भव एवं
किताब लिख चुके
क में व्यस्त हैं।
राष्ट्र के कम से कम
ब के जरिये पीएचडी
की लाइब्रेरी में यह
तत्व विभाग ने भी
के कई बिंदुओं पर
है। 15 साल से यह
पाल के पास कुश्ती
फोटो और इतने ही
केवल ऐतिहासिक

नामी पहलवानों के
। उन परिवारों को

फोटो, दस्तावेज और कसरत के साधन सुरक्षित रखने के लिए जागरूक किया जिनमें नामी पहलवान हुए। कोई ऐसा नामी पहलवान नहीं जो उन्हें न जानता हो।

जल बचाने की धुन सवार

धर्मेंद्र यादव, सिरसा

साठ साल की उम्र में ही सही रमेश गोयल ने इसे जीवन का मिशन बना लिया। वे आपको ट्रेन में इश्तिहार बांटते दिख सकते हैं, स्कूल-कॉलेज में छात्रों को संबोधित करते हुए मिल जाएंगे। बात जल बचत की हो रही है, इसके लिए लोगों को जागरूक करने की जैसे उन पर धुन सवार हो।

आयकर मामलों के अधिवक्ता रमेश गोयल अपने जल जागरूकता मिशन के तहत घूम-घूमकर अब तक 1.20 लाख इश्तहार बांट चुके हैं। उनके इस मिशन का किस्सा भी रोचक है। वह बताते हैं, जब आठ साल का था, तब नौहरिया बाजार निवासी बुजुर्ग मानमल अग्रवाल कहा करते थे कि पानी बर्बाद न करो, पाप लगेगा। तभी से यह बात जेहन में चली आ रही थी। अंततः 2008 में जल बचत जागरूकता को मिशन के रूप में चलाने का फैसला लिया।

रविवार विशेष

मिशन के तहत 150 से ज्यादा शिक्षण संस्थानों में गोयल खुद बच्चों से रूबरू हुए और उन्हें जल बचत की अहमियत व तौर-तरीके बताए। वे लगभग 70 हजार बच्चों को प्रत्यक्ष रूप से जल बचत का संदेश दे चुके हैं। 2010 में लिखी 'बिन पानी सब सून' किताब में पानी की बचत के टिप्स का विस्तार से उल्लेख किया गया है। अगले साल 2 दिसंबर जल जागरूकता दिवस के अवसर पर जल चालीसा पुस्तक का विमोचन मुख्यमंत्री भूपेंद्र हुड्डा ने किया।

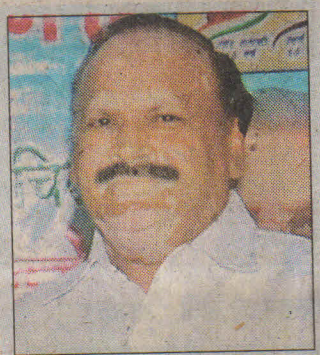

चालीसा वितरित की

गोयल बताते हैं कि किताब की छह हजार व जल चालीसा की साढ़े चार हजार प्रतियां लोगों को निशुल्क वितरित की। गोयल कहते हैं कि जल उपलब्धता में हरियाणा की स्थिति भयावह है। 119 वाटर ब्लॉक में से 40 प्रतिशत डार्क जोन में चले गए हैं। दस साल पहले 30 फीसद डार्क जोन में थे। सरकार व जनता को जागना होगा। पानी की बर्बादी पर सरकार को सख्त कदम उठाने होंगे।

दैनिक जागरण 5 जनवरी 2013

13 उम्मीद

जल बर्बादी पर लगे लगाम

65 प्रतिशत सिंचाई व 85 प्रतिशत पेयजल की आपूर्ति भूजल से

संवाद सहयोगी, सिरसा: आने वाले समय में जल संकट सबसे बड़ा संकट हो सकता है। जल के बिना जीवन संभव नहीं है। लोग फिर भी जल संरक्षण को लेकर गंभीर नहीं हैं और अंधाधुंध जल की बर्बादी कर रहे हैं। जल संरक्षण के लिए हमें उचित कदम उठाने का वक्त आ गया है। जल की उपयोगिता जीव जगत में सबसे महत्वपूर्ण है। जल संकट की चुनौती पर गंभीरता दिखाते हुए जल बचाओ अभियान की मुहिम में सभी को शामिल होना पड़ेगा अन्यथा परिणाम गंभीर हो सकते हैं।

गिरता जा रहा भूजल स्तर व कम हो रही बरसात के कारण जल की उपलब्धता का पहलू चिंतनीय होता जा रहा है। देश में 65 प्रतिशत सिंचाई व 85 प्रतिशत पेयजल की आपूर्ति भूजल से हो रही है इसलिए भूजल का स्तर वर्ष दर वर्ष नीचे जा रहा है। भूजल बोर्ड के एक सर्वे के अनुसार वर्ष 2005 में देश के 5723 जल ब्लाक में से 30 प्रतिशत ब्लाक डार्क जोन घोषित कर दिए गए थे। यदि हम सचेत नहीं हुए तो 2030 तक देश में 60 प्रतिशत जल ब्लाक डार्क जोन में आ जाएंगे। बरसात भी हर वर्ष कम हो रही है जिसके पीछे बढ़ रहे वायु प्रदूषण व घट रहे वन्य क्षेत्र को ही कारण माना जा रहा है।

चालू वर्ष जल सहंभागिता वर्ष

संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2013 को जल संकट के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय जल सहभागिता वर्ष घोषित किया है। दुनिया भर में इस वर्ष जल संकट को लेकर संयुक्त राष्ट्र अभियान चलाएगा। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट अनुसार भूजल दोहन में भारत का दूसरा नंबर है इसलिए भारत में जल बचाओ अभियान विशेष रूप से चलाए जाने की उम्मीद है।

रेनवाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम

गिरते भूजल स्तर के ग्राफ को देखते हुए केंद्रीय भूजल बोर्ड ने जिला के सात में से चार खंडों को डार्क जोन घोषित कर दिया है। डार्क जोन में रानियां, ऐलनाबाद, सिरसा व बड़ागुढ़ा शामिल हैं। भूजल का रिचार्ज करने के लिए भूजल कोष विभाग द्वारा जिला में 34 रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाए गए हैं। शिक्षा विभाग ने भी इस क्षेत्र में पहल करते हुए वर्ष 2013 में 20 रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाएगा।

चुनौतियां ये

गिरता भूजल स्तर सबसे बड़ी चुनौती बन रहा है। पिछले दो दशकों से भूजल स्तर के गिरने की गति काफी तेज हुई है। अधिक पानी वाली फसलें व जल की बर्बादी आने वाली पीढ़ी को जल संकट में डाल सकती है।

सुलझाएं ऐसे

कम पानी वाली फसलें व नवीनतम तकनीक के आधार पर ड्रिप इरिगेशन सिस्टम से कृषि में प्रयोग होने वाले पानी को दस गुणा तक बचाया जा सकता है।

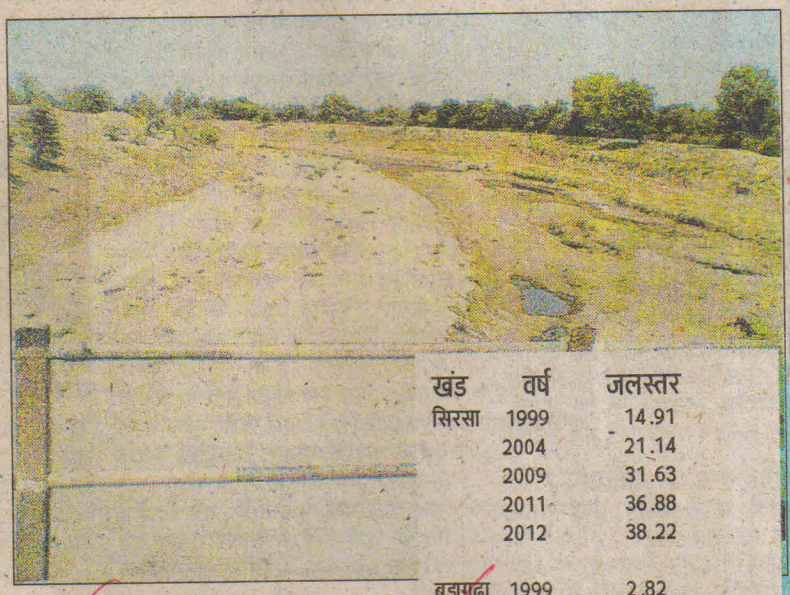

सूख गई घग्घर नदी यहां कभी बहती थी जलधार।

जल संरक्षण की राह पर कुछ सधे कदम

केंद्रीय भूजल बोर्ड की जिला सलाहकार समिति के सदस्य एडवोकेट रमेश गोयल ने जल संकट की गंभीरता को देखते हुए पिछले चार वर्षों से लोगों को जागरूक करने के लिए कई कदम उठाए हैं। गोयल ने बताया कि अब तक उसने जल बचाने के टिप्स लिखे एक लाख 20 हजार पम्पलेट छपवाकर शिक्षण संस्थानों में वितरित किए हैं। जल बचत को लेकर लोगों को जागरूक करने के लिए प्रदेशभर में 500 फ्लैक्स बोर्ड लगवाए हैं। इसके अलावा विभिन्न कार्यक्रमों व स्कूलों की प्रार्थना सभा में रमेश गोयल जल बचत का संदेश दे रहे हैं। उन्होंने बताया कि वे इस वर्ष जल बचत यात्रा शुरू करेंगे जिसके प्रथम चरण में प्रदेश के सभी जिलों को कवर करेंगे और द्वितीय चरण में देशभर में यह यात्रा निकाली जाएगी। एडवोकेट रमेश गोयल ने 'जल चालीसा' व 'बिन पानी सब सून' पुस्तक भी लिखी है जिसमें जल के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। फेस बुक के माध्यम से भी एडवोकेट गोयल लोगों को जल बचाने के लिए प्रेरित करते हैं। गोयल ने डब्ल्यूडब्ल्यू.सेववाटरसेवलाइफ.काम बनाकर जल संकट की विस्तृत जानकारी इंटरनेट पर भी लोगों को उपलब्ध करवा रखी है। उनका मानना है कि जल की बर्बादी अगर यूं ही होती रही तो एक दिन ऐसा आ जाएगा जब पीने के लिए पानी भी नसीब नहीं होगा।

खंड	वर्ष	जलस्तर
सिरसा	1999	14.91
	2004	21.14
	2009	31.63
	2011	36.88
	2012	38.22
बड़ागुढ़ा	1999	2.82
	2004	5.19
	2009	7.39
	2011	8.32
	2012	8.73
ओढां	1999	9.92
	2004	9.86
	2009	11.19
	2011	11.78
	2012	12.18
डबवाली	1999	11.1
	2004	9.68
	2009	10.54
	2011	10.73
	2012	11.74
ऐलनाबाद	1999	7.82
	2004	11.69
	2009	18.36
	2011	21.48
	2012	21.75
चौपटा	1999	7.04
	2004	8.11
	2009	9.92
	2011	10.27
	2012	9.82
रानियां	1999	12.20
	2004	13.92
	2009	19.53
	2011	22.05
	2012	23.03

नोट : आंकड़े मीटर में हैं।

Guests of the Week

समाज को समर्पित एक विशिष्ट शख्सियत श्री रमेश गोयल

23 अक्टूबर 1948 को सिरसा के एक साधारण परिवार में जन्में श्री रमेश गोयल ने बचपन से ही संघर्षशील जीवन व दृढ़ संकल्प के सहारे अपनी शिक्षा पूरी की। पिछले चालीस वर्षों से आयकर सलाहकार के रूप में व्यवसायी, बिक्रीकर और आयकर ट्रिब्यूनल हरियाणा-पंजाब तथा दिल्ली तक अपील प्रतिनिधित्व करते रहे श्री गोयल आयकर बार एसोसिएशन में भी विभिन्न पदों पर महती भूमिका निभा चुके हैं। आप बिक्रीकर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष व हरियाणा बिक्रीकर बार एसोसिएशन की संविधान समिति के चेयरमैन रहे तथा ऑल इंडिया फैडरेशन ऑफ टैक्स प्रैक्टिसनर्स के आजीवन सदस्य हैं। देश व समाज की ज्वलन्त समस्या पानी की कमी के प्रति जागरूकता को मिशन के तौर पर लेते हुए आप स्कूल, कालेजों में जाकर विद्यार्थियों को पानी, बिजली की बर्बादी रोकने और बचत के उपायों से अवगत करा रहे हैं। अभी तक लगभग साढ़े बारह हजार विद्यार्थियों को जागरूक कर चुके श्री गोयल इस संदर्भ में हजारों विज्ञप्तियां भी वितरित कर चुके हैं। पानी बचत संबंधित 'बिन पानी सब सून' नामक पुस्तक भी प्रकाशित की गई है, जिसका विमोचन 8 मई 2010 को हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाडिया द्वारा किया गया था। इसके अलावा हरियाणा टूडे, दूरदर्शन केन्द्र हिसार, चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय के रेडियो स्टेशन एफ.एम 90.4 से जल बचत पर श्री गोयल की वार्ता अनेक बार प्रसारित हो चुकी है। आपको जल संरक्षण के क्षेत्र में विषेश कार्य करने के लिए 15 अप्रैल 2011 को हरियाणा राज्य के लिए दैनिक भास्कर समाचार पत्र समूह द्वारा जल स्टार अवार्ड 2011 से भी पुरस्कृत किया जा चुका है। श्री सेवा समिति, महाराजा अग्रसेन मैडिकल कालेज अग्रोहा, द सिरसा सिटीजन वैलफेयर फोर्म, भारतीय साहित्य परिषद् सिरसा, श्री श्याम बाल भवन ट्रस्ट, श्री श्याम परिवार ट्रस्ट, श्री बाल अमर समिति पुस्तकालय ट्रस्ट, बाबा तारा चैरिटेबल ट्रस्ट, आराधना गोयल स्मृति पुण्यार्थ ट्रस्ट, गौ रक्षा सेवा समिति, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, अखिल भारतीय वैश्य सम्मेलन, हरियाणा मूकबधिर सोसायटी समेत अन्य सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुड़े श्री गोयल हरियाणा प्रदेश के उन गौरवशाली व अतिविशिष्ट व्यक्तियों में से एक हैं, जो अपना पूरा व्यवसायिक कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में करते हैं। बाल्यकाल से ही संघर्षशील जीवन के साथ आगे बढ़ते हुए समाज व देश के लिए कुछ विशेष करने के लिए हर समय तत्पर रहते हैं और 'निज पर शासन फिर अनुशासन' तथा दृढ संकल्प, निष्ठा व लगन के साथ आय अर्जन हेतु विभिन्न कार्य व अध्ययन साथ-साथ करते हुए आगे बढ़ते रहे हैं और आज एक सफल व्यवसायी व सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में पूरे क्षेत्र में प्रतिष्ठित व परिचित हैं।

साप्ताहिक
नायक भारती
दिल्ली
5-11/2/2012

55

जल बचाएं, भविष्य सुरक्षित बनाएं

नाथूसरी चौपटा | जल संरक्षण अभियान हरियाणा के संस्थापक व केंद्रीय भूजल बोर्ड के रमेश गोयल ने कहा कि जल बचाएं और भविष्य को सुरक्षित बनाएं। वे बुधवार को चौपटा स्थित दयानंद वरिष्ठ माध्यमिक स्कूल में जल संरक्षण विषय पर हुई गोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। बाद में उन्होंने चौपटा स्थित आईटीआई और राजकीय बहुतकनीकी संस्थान में भी विद्यार्थियों को जल संरक्षण के महत्व को बताया। उन्होंने वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम अपनाने पर जोर दिया।

दैनिक भास्कर
8/11/12

हर घर में जल बचाओ अभियान का संदेश देने को तत्पर रमेश गोयल

एसएमएस सिखाएगा पानी बचाना

दिनेश कौशिक

सिरसा। पीने के पानी की बहुत कमी है, इसे ध्यान में रखते हुए पानी बेकार न बहाएं, क्योंकि जल ही जीवन है। जल बचेगा तो जीवन बचेगा, क्योंकि जल है तो कल है। स्वयं इसका पालन करें और दूसरों को भी समझाएं। यदि इस प्रकार का समाजोपयोगी संदेश आपके मोबाइल पर आए तो चौंकिएगा नहीं, क्योंकि सिरसा के जल स्टार रमेश गोयल शीघ्र ही अपना जल बचाओ अभियान मोबाइल पर एसएमएस से भी शुरू करने वाले हैं।

2008 से सिरसा में जल बचाओ अभियान आरंभ करने वाले अधिवक्ता रमेश गोयल इस अभियान को चरम पर ले जाने की इच्छा रखे हुए हैं और इसी कड़ी में वे अब न केवल पोस्टर और बैनर, बल्कि एसएमएस के जरिए भी आमजन तक यह समाजहित का संदेश देने की ठान चुके हैं। 2008 से लेकर अब तक वे जिले में करीब सवा लाख लोगों तक पानी व बिजली बचाने की जागरुकता के अभियान के रूप में प्रत्यक्ष रूप से संदेश दे चुके हैं। उन्होंने मई 2008 में स्वामी विवेकानंद सीनियर सेकेंडरी स्कूल से आरंभ करके जिले के 60 किलोमीटर के दायरे में आने वाले सभी राजकीय व गैर राजकीय स्कूलों में विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को पानी व बिजली बचाने का संदेश दिया था। रमेश गोयल बताते हैं कि वे अभियान के तहत हर घर में पानी बचाने का संदेश देने के लिए तत्पर हैं और इसके लिए वे संस्था भारत विकास परिषद, ग्राम पंचायतों और सामाजिक संस्थाओं का सहयोग लेंगे। संस्थाओं के माध्यम से पोस्टर शहर और गांव के हर घर में पहुंचाने और बस अड्डा, रेलवे स्टेशन, धर्मशालाएं, बैंक आदि सार्वजनिक स्थलों के बाहर लगावाएंगे। रमेश गोयल ने अभियान में प्रशासनिक अधिकारियों को भी पत्र लिखकर सहयोग मांगा है। उन्होंने जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग को पत्र लिखकर वर्षा जल संग्रहण के लिए आवश्यक व्यवस्था का प्रबंध करने का आग्रह किया है। हरियाणा में स्थापित सभी विश्वविद्यालयों से भी इस योजना को मूर्त रूप देने का आग्रहपत्र लिखा है। उनके आग्रह पत्र पर महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक व चौधरी देवीलाल यूनिवर्सिटी सिरसा के प्रशासन ने इस दिशा में सकारात्मक संदेश दिए हैं।

ये देते हैं टिप्स

अभियान के दौरान रमेश गोयल स्कूलों में विद्यार्थियों व उनके अभिभावकों को पानी बचाने के लिए अनेक टिप्स देते हैं। इसमें नल को बगैर आवश्यकता खुला न छोड़ने, शेविंग या पेस्ट अथवा मुंह हाथ धोते समय पानी का प्रयोग न करते समय नल बंद करने, मग में पानी भरकर प्रयोग करने, कपड़ों को मशीन में नहीं, बाल्टी में खंगालें, पाइप में रिसाव हो तो तुरंत ठीक कराएं, नहाते समय पानी बाल्टी भरकर मग द्वारा प्रयोग करने, खुले सार्वजनिक नल को बंद करें, अनावश्यक छिड़काव न करें, भूजल स्तर बढ़ाने के लिए वाटर रिजचार्जर लगाएं।

प्रचार सामग्री का आवंटन

जल और विद्युत बचत अभियान को तेजी से चलाने वाले रमेश गोयल भारत विकास परिषद् के क्षेत्रीय महामंत्री हैं, जो अपनी संस्था के माध्यम से भी लोगों को जल विद्युत बचाने के लिए प्रेरित करते हैं।

आज समाज 7/11/2011

पृष्ठ संपादक : आलोक पाण्डेय >> सहयोग : अनूप सिंह >> पृष्ठ सज्जा : विक्र

आज समाज 7/11/2011

दिनचर्या में बदलाव से बचाएं पृथ्वी

विश्व पृथ्वी दिवस आवश्यकता से अधिक किसी भी चीज के प्रयोग से फैलता है असंतुलन

भास्कर न्यूज | सिरसा

मौसम में तेजी से बदलाव, गर्मियों में बहुत गर्मी व सर्दियों में बहुत सर्दी, उत्तरी ध्रुव के ग्लेशियर्स का पिघलना, सूर्य की पैराबैंगनी किरणों को पृथ्वी तक आने से रोकने वाली ओजोन परत में छेद होना, दुनियाभर में समुंदर के स्तर में बढ़ोतरी के साथ ही हर साल कहीं बाढ़ व कहीं सूखा पड़ना, पैदावार में कमी, वनस्पति व जानवरों की प्रजातियां लुप्त होना, यह सब पर्यावरण प्रदूषण का ही कारण है। वहीं बीमारियां बढ़ना, भयंकर तूफान व सुनामी जैसी घटनाओं के पीछे भी वजह पर्यावरण असंतुलन है। ऐसे में सभी को पर्यावरण के प्रति गंभीर होने की जरूरत है। इसके लिए सर्वप्रथम मानव जीवन की दिनचर्या बदलाव जरूरी है।किसी भी चीज के आवश्यकता से अधिक प्रयोग को रोकना होगा। यही लब्बोलुआब निकला रविवार को विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय में आयोजित कॉन्फ्रेंस में। विश्वविद्यालय के ऊर्जा एवं पर्यावरण विज्ञान विभाग के तत्वावधान में हुई कॉन्फ्रेंस में विभिन्न वर्गों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया और पर्यावरण असंतुलन के बढ़ रहे खतरों पर गौर करते हुए कारण व बचाव के लिए विचार रखे।

नेल्सन ने की थी शुरूआत

कॉन्फ्रेंस कन्वीनर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. रानी रावत ने बताया कि 22 अप्रैल, 1970 को अमेरिकी सीनेटर जेराल्ड नेल्सन ने पर्यावरण शिक्षा के रूप में पृथ्वी दिवस की शुरूआत की थी जिसे आज 175 देशों में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि धरती पर आ रही आपदाएं हमें संकेत दे रही हैं कि धरती को बचाने के लिए आगे आना होगा नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब जीव-जंतु व वनस्पति का अस्तित्व ही खत्म हो जाएगा। प्राकृतिक असंतुलन में बड़ा कारण ग्लोबल वार्मिंग है। इसकी वजह तेजी से हुआ औद्योगिकरण, जंगलों का कटाव, फ्रिज या एयरकंडीशनर का बढ़ता प्रयोग है। पर्यावरण विभाग से डॉ. एमके किदवई ने कहा कि पॉलीथिन भूमि की उर्वरा शक्ति को नष्ट कर रहा है तो हर साल लाखों पशु-पक्षी भी पॉलीथिन के कचरे से मर रहे हैं। भूगर्भीय जल स्त्रोत भी दूषित हो रहे हैं तो पॉलीथिन जलाने से विषैली गैस निकलती हैं जिससे ओजोन परत को नुकसान पहुंचता है। डॉ. वैद बैनीवाल ने कहा कि सबसे पहले हम सब को खुद की जरूरतों पर अंकुश लगाना होगा जिसमें डीजल या पैट्रोल का प्रयोग हो या पॉलीथिन, पानी या कागज। डॉ. सुलतान ढांडा ने कहा कि व्यक्ति को निजी स्वार्थ के सिवाय समाज, धरती और पर्यावरण के प्रति सोचने की तो फुर्सत ही नहीं रह गई। धरती का बचाव कोई एक नहीं बल्कि सब मिलजुलकर कर सकते हैं। रिटायर्ड डीएसपी रायसिंह सहारण ने कहा कि पर्यावरण के लिए गंभीर चिंता परमाणु व मेडिकल वेस्ट है। क्योंकि इन दोनों से ही अनेक गंभीर बीमारियों को बढ़ावा मिलता है। पर्यावरण विषय के शोध कर्त्ता पवन कुमार रोज ने कहा कि हमें आने वाली नस्लों को पर्यावरण संरक्षण के लिए संस्कार देने की जरूरत है ताकि पर्यावरण की रक्षा व सुरक्षा की भावना पैदा हो। शोध कर्त्ता आलोक ने बेकार समझकर फेंकी जाने वाली चीजों को री साइक्लिंग कर उपयोग में लाने पर बल दिया। नई सुबह संस्था के प्रदेशाध्यक्ष मा. सूबेसिंह चाहरवाला ने पर्यावरण बचाने का संकल्प लेने का आह्वान किया तो विद्यार्थी कविता, नीरू, कर्मजीत, कोमल, शिवानी, मौसम, सुनीता, विकास, रवि, पूनम ने भी पर्यावरण संरक्षण पर विचार व्यक्त किए।

धर्मग्रंथों में यही संदेश

महेश पारीक एडवोकेट ने कहा कि पर्यावरण बचाने का संदेश हमें धर्मग्रंथों में भी मिलता है। प्रकृति के तत्वों में हवा, जल, भूमि आदि को धर्मानुसार देवता माना गया है जिनका बचाव हमारा कर्त्तव्य है। जब हम ही हमारे देवताओं का अनादर करेंगे तो इसका खामियाजा भुगतना ही पड़ेगा।

एकजुट हो बचाएं पर्यावरण

पर्यावरण प्रेमी रमेश गोयल ने कहा कि खतरों का आभास है फिर भी अनजान हैं। नियमित दिनचर्या में ही बदलाव करके पर्यावरण को बचा सकते हैं। बिना वजह दिन में लाइट के दुरुपयोग से भी ऊर्जा व्यर्थ में जाया होती है। इन बातों पर ध्यान देते हुए सभी को पर्यावरण के लिए एकजुट होना होगा।

दैनिक भास्कर 23 अप्रैल 2012.

Times of India, Chandigarh
25th March 2012

A 'Jal Chalisa' to help conserve water

Ramesh Goyal spells out ways to save water in a treatise. **Bhaskar Mukherjee** *meets the man*

"Jal hai to kal hai yeh jano, Pani ke mehtav ko pehchano, Jo jan chand ja kar aye, Bin jal chand par reh nahi paye!"— Jal Chalisa

Move over Hanuman Chalisa, get ready for Jal Chalisa. Rattled by the wanton environmental destruction, an advocate has written a long treatise to make people aware about the need to save water. The 'water man' calls it Jal Chalisa.

Ramesh Goyal has published 5,000 copies of the document and is distributing them among the people of Sirsa to exhort them to stop wasting water.

Talking to TOI, Goyal said, "Chalisa word strikes a chord in one's heart. As Hanuman Chalisa is widely popular and read by Indians, I added the word Chalisa to my treatise."

Earlier on May 8, 2010, Goyal had launched a book 'Bin Pani Sab Soon', which was released by the governor of Haryana, Jagannath Pahadia. Goyal has published 6,000 copies of the book and most of the copies were distributed among youths and schoolchildren. Goyal writes, "Pani ke liye ladte Pradesh, Pradesh hi nahi ladte hain desh, Ab bhe nahi sambhle prani, Hoga vishv yudh ka karan pani!"

Goyal said, "In 2008, I saw my son wasting water while washing hands. He wasted more than two litre water. It struck me that if my son wastes 2 litre for merely washing hands, then the city could be wasting 2 lakh litres of water in a day."

When this realization dawned on him, he was a changed man. It gave birth to his silent movement. Goyal believes greening the young minds is crucial to tackling the impending environmental catastrophe.

Goyal visits schools and colleges in Haryana, distributes pamphlets and book as well as Jal Chalisa. The advocate has been awarded by the Haryana governor. He has put his creation on Facebook and other social networking sites. "Social networking sites are visited by everyone. If my work is noticed, I am sure some of the netizens will surely try to implement it in their every day life. My aim is to save earth from the impending water crisis. I want to spend rest of my life to make the masses aware about the significance of water conservation," he signed off.

Ramesh Goyal making a point

TIMES OF INDIA 25/3/12

परम आदरणीय मित्र ॐ नयाटोला, कटिहार

सत्यमेव जयते। दिनांक 8-5-2011

8 मई के पाञ्चजन्य में आपका सारगर्भित, पुरस्कृत पत्र "घातक है ध्वनि प्रदूषण" पढ़ा। इसमें भविष्य में होनेवाले संकटों के बारे में भी इशारे किए गए हैं। मगर मनुष्य है कि माने कहाँ। करते चले जा रहे मनमानी और संकट में डाले जा रहे धरती पर के सारे जीवों को। ध्वनि प्रदूषण, वायु-प्रदूषण, जल प्रदूषण, मिट्टी प्रदूषण, रक्त, बीज, मांस, मज्जा, स्वभाव, दृष्टि, शरीर के सारे मशीनरी प्रदूषित हो परिवर्तित हो चुके हैं। तभी तो मनुष्य नहीं रह गए हैं और मानवोचित कार्य नहीं कर रहे हैं। और अब लगता है शुद्ध होने का कोई लक्षण नहीं लगता। धरती उलट-पुलट होकर ही रहेगी। और आसार सुनामी, कटरीना प्रकट हो दर्शा रहे हैं।

अब समलैंगिकता को मान्यता देने के लिए इन्कलाब जिन्दाबाद कर रहे। क्या कर रहे, कुछ समझ रहे हैं? ईश्वर की सृष्टि को ललकार रहे हैं। तो प्रकृति आपको क्यों छोड़े? 84 लाख योनियों में जिस मैथुन क्रिया से जीवों का पैदा होना हुआ उसी को नष्ट करने पर तुले हैं। आमादा हैं।

मनुष्य चुस्त-चालाक बनते और करते हैं मूर्खता। कहते संसार से कुछ नहीं लेकर जाना है। धन-दौलत, हाथ का मैल है। मगर धन-दौलत के लिए इज्जत तक गँवा देते। घूसखोरी, घपले-घोटाले, मिलावटी करते। कुछ समझते कि यत्किञ्चित पुण्य अर्जन कर 84 लाख के मनुष्य योनि में आए और उसी में रत रहते तो, मुक्ति-मोक्ष निश्चित। मगर भूल जाते। करते जाते उलट-पुलट। और फिर 84 में पड़े जाते। हर जीव कृत संकल्पी है कुण्डलिनी को मूलाधार चक्र से चलायमान कर छः चक्रों को पार कर सहस्रार पर पहुँचाता है। चाहे खान-पान-सोच के अनुसार जो भी क्रिया कलाप आप संपादित हो वैसी ही तरक्की, अधोगति। जैसे मकड़े के पेंदे के तार में अप डाउन करते-2 एक बार गन्तव्य स्थान पर पहुँच ही जाता है। अष्टांग योग पर साधना की चर्चा फिर कभी। तब, तभी जब आप जानना चाहेंगे। आपका पोस्टल पिन कोड एवं मोबाइल नं० नहीं छपा है कृपया भेजेंगे और आप भी पाठकों से पत्राचार करें हिन्दुत्व प्रेम को प्रगाढ़ करें। बस! पत्रोत्तर दें।

प्रेषक -
हरेन्द्र प्रसाद साहा 78 वर्ष
भू० पू० स्टे० मास्टर
नयाटोला, कटिहार-854105 (बिहार)
मो० नं०- 9472217058

78 वर्षीय भू० स्टेशन मास्टर का बिहार से डाक द्वारा मई 2011 में प्राप्त पत्र

नायक भारती
दिल्ली

The Tribune
Chandigarh, Friday April 15, 2011 4

11/2/2012

Guests of the Week

समाज को समर्पित एक विशिष्ट शख्सियत श्री रमेश गोयल

23 अक्टूबर 1948 को सिरसा के एक साधारण परिवार में जन्में श्री रमेश गोयल ने बचपन से ही संघर्षशील जीवन व दृढ़ संकल्प के सहारे अपनी शिक्षा पूरी की। पिछले चालीस वर्षों से आयकर सलाहकार के रूप में व्यवसायी, बिक्रीकर और आयकर ट्रिब्यूनल हरियाणा-पंजाब तथा दिल्ली तक अपील प्रतिनिधित्व करते रहे श्री गोयल आयकर बार एसोसिएशन में भी विभिन्न पदों पर महती भूमिका निभा चुके हैं। आप बिक्रीकर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष व हरियाणा बिक्रीकर बार एसोसिएशन की संविधान समिति के चेयरमैन रहे तथा ऑल इंडिया फैडरेशन ऑफ टैक्स प्रैक्टिसनर्स के आजीवन सदस्य हैं। देश व समाज की ज्वलन्त समस्या पानी की कमी के प्रति जागरूकता को मिशन के तौर पर लेते हुए आप स्कूल, कालेजों में जाकर विद्यार्थियों को पानी, बिजली की बर्बादी रोकने और बचत के उपायों से अवगत करा रहे हैं। अभी तक लगभग साढ़े बारह हजार विद्यार्थियों को जागरूक कर चुके श्री गोयल इस संदर्भ में हजारों विज्ञप्तियां भी वितरित कर चुके हैं। पानी बचत संबंधित 'बिन पानी सब सून' नामक पुस्तक भी प्रकाशित की गई है, जिसका विमोचन 8 मई 2010 को हरियाणा के राज्यपाल श्री जगन्नाथ पहाडिया द्वारा किया गया था। इसके अलावा हरियाणा टूडे, दूरदर्शन केन्द्र हिसार, चौ. देवीलाल विश्वविद्यालय के रेडियो स्टेशन एफ.एम 90.4 से जल बचत पर श्री गोयल की वार्ता अनेक बार प्रसारित हो चुकी है। आपको जल संरक्षण के क्षेत्र में विषेश कार्य करने के लिए 15 अप्रैल 2011 को हरियाणा राज्य के लिए दैनिक भास्कर समाचार पत्र समूह द्वारा जल स्टार अवार्ड 2011 से भी पुरस्कृत किया जा चुका है। श्री सेवा समिति, महाराजा अग्रसेन मैडिकल कालेज अग्रोहा, द सिरसा सिटीजन वैलफेयर फोर्म, भारतीय साहित्य परिषद् सिरसा, श्री श्याम बाल भवन ट्रस्ट, श्री श्याम परिवार ट्रस्ट, श्री बाल अमर समिति पुस्तकालय ट्रस्ट, बाबा तारा चैरिटेबल ट्रस्ट, आराधना गोयल स्मृति पुण्यार्थ ट्रस्ट, गौ रक्षा सेवा समिति, अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन, अखिल भारतीय वैश्य सम्मेलन, हरियाणा मूकबधिर सोसायटी समेत अन्य सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुड़े श्री गोयल हरियाणा प्रदेश के उन गौरवशाली व अतिविशिष्ट व्यक्तियों में से एक हैं, जो अपना पूरा व्यवसायिक कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में करते हैं। बाल्यकाल से ही संघर्षशील जीवन के साथ आगे बढ़ते हुए समाज व देश के लिए कुछ विशेष करने के लिए हर समय तत्पर रहते हैं और 'निज पर शासन फिर अनुशासन' तथा दृढ संकल्प, निष्ठा व लगन के साथ आय अर्जन हेतु विभिन्न कार्य व अध्ययन साथ-साथ करते हुए आगे बढ़ते रहे हैं और आज एक सफल व्यवसायी व सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में पूरे क्षेत्र में प्रतिष्ठित व परिचित हैं।

Saving water is his mission

SUSHIL MANAV
TRIBUNE NEWS SERVICE

SIRSA, APRIL 14

The efforts made by local tax consultant Ramesh Goyal towards conservation of water in Sirsa and surrounding areas are laudable. Under a campaign to save drinking water, Goyal has so far spread his message to over one lakh students by addressing meetings in schools and colleges.

The taxation consultant speaks about the importance of water and drives home his point as to how the sources of water are fast depleting in the world.

During his address, Goyal also speaks about the methods to save water.

Goyal, who started his mission two years back, has so far distributed 80,000 pamphlets listing dos and don'ts on the use of water.

He has also written a book titled "Bin Paani Sab Soon" and has distributed 6000 copies to the public. He has also participated in talks on this issue on FM Radio and Doordarshan.

Goyal presented a copy of his book to Haryana Governor Jagannath Paharia during his visit to local CMK National PG College on May 8 last year.

Ramesh Goyal

The Governor lauded his efforts and concern for saving the most precious commodity on earth.

"We waste water mercilessly during our daily use. The aim of my campaign is to avoid that wastage as far as possible," Ramesh Goyal said.

"Simples measures like stopping the flow of water while shaving, brushing teeth, using basket and mug instead of shower while bath, using blowers in water tanks and coolers and use of waste water from water purifiers for other chores can save much," he added.

Goyal said he did not begin the campaign for any award or appreciation, but his had genuine concern for the cause.

15/4/2011

नायक भारती
दिल्ली
11 मार्च 2012

अंतरराष्ट्रीय जल संरक्षण दिवस पर विशेष

नहीं चेते तो होगा जल के लिए विश्व युद्ध

सिरसा, जागरण संवाद केंद्र : तीसरा विश्व युद्ध हालांकि अभी भविष्य के गर्भ में है। कहते है कि यह विश्व युद्ध जल को लेकर होगा। यह कहना अभी जल्दबाजी होगा कि उपरोक्त कथन हकीकत में तब्दील होगा या नहीं पर इतना तो अवश्य है कि पानी की बचत के प्रति यूं ही उदासीनता बनी रही तो इसी सदी में जल संकट गहरा हो जाएगा। जल संरक्षण के प्रति गंभीर लोगों तथा विशेषज्ञों का कमोबेश यहीं मानना है।

पेशे से वकील पर जल संरक्षण के ध्वजवाहक एडवोकेट रमेश गोयल की चिंता भी उन्हीं के शब्दों में जायज दिखाई दे रही है। उनका कहना है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2004 के एक सर्वेक्षण के तहत पूरी दुनिया के एक अरब से अधिक लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता। भूजल वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी के अनुसार भारत, चीन और अमेरिका जैसे देशों में अधिक भूजल दोहन से जलस्तर में तेजी से गिरावट आ रही है। उनका कहना है कि यह इस खतरे का संकेत है कि आने वाले समय में तीसरा विश्व युद्ध पानी के नाम पर लड़ा जाएगा। वह आगे बताते है कि पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अत्यधिक दोहन एवं प्रदूषण के चलते आज सभी देशों को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है।

मुहिम

- जल पुरुष रमेश गोयल छेड़े हुए हैं जागरूकता अभियान

सिरसा जिला के 100 से अधिक विद्यालयों व महाविद्यालयों में एक लाख 20 हजार विद्यार्थियों व अध्यापकों को जल के महत्व, उपलब्धता, पानी बचत की आवश्यकता व अनिवार्यता तथा रोकने के उपायों पर व्याख्यान दे चुके गोयल कहते है कि पानी के लिए लड़ाई गली-मोहल्ले से लेकर देशों तक देखी गई है। उनका कहना है कि पंजाब-हरियाणा, कर्नाटक-तमिलनाडु, हरियाणा-दिल्ली, पंजाब-राजस्थान जैसे प्रांतों का पानी के लिए आपसी तनाव जगजाहिर है। रमेश गोयल कहते है कि बहुत से लोग यह नहीं जानते कि वे अनजाने में बहुत पानी बर्बाद करते है। वे बताते है कि हवा, पानी, मिट्टी आदि प्रकृति की देन है। मगर इसका सदुपयोग हमारा दायित्व है। वह बताते है कि पीने योग्य स्वच्छ जल कुल उपलब्ध पानी का एक प्रतिशत से भी कम है। एडवोकेट रमेश गोयल के अनुसार भारत में जल संकट को दूर करने के रास्ते में चार मुख्य चुनौतियां है-सार्वजनिक सिंचाई नहरों की क्षमता में बढ़ोतरी, कम हो रहे भूमि जल संग्रह को पुनः संग्रहित करना, प्रति यूनिट पानी में फसलों की उत्पादकता में वृद्धि तथा भूमिगत और भूमि के ऊपर जल स्त्रोतों को नष्ट होने से बचाना। उनके अनुसार अगर हम पानी की बचत नहीं करेंगे तो बिन पानी सब सुन हो जाएगा।

भास्कर 17/3/2011

अभी से जान लीजिए, जल है तो कल

पहल आयकर अधिवक्ता रमेश गोयल ने समझी जल की महत्ता, लोगों को कर रहे प्रेरित

भास्कर न्यूज | सिरसा

लोग तेजी से जल बचाने के प्रति जागरूक हो रहे है। ऐसे लोग भी हैं जो लगातार लोगों को जल की महत्ता समझाने में जुटे हैं। ऐसा ही एक नाम है आयकर अधिवक्ता रमेश गोयल का, जो गांवों में और स्कूलों में जाकर जल बचाने की अलख जगा रहे हैं।

रमेश गोयल

भारत विकास परिषद के क्षेत्रीय मंत्री रमेश गोयल वर्ष 2008 से इस कार्य में जुटे थे। वे तब से लगातार जिले के अनेक राजकीय स्कूलों, गैर राजकीय स्कूलों, मंदिरों, बस अड्डा, सरकारी कार्यालयों व धर्मशालाओं आदि स्थलों पर लोगों को जल सरंक्षण व विद्युत बचत के लिए लिखे बैनर व पोस्टर बांट रहे हैं और उन्हें जल बचाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

90 हजार पोस्टर बांट चुके

गोयल अब तक गांव बेगू, अरनियांवाली, रंधावा, डिंग, जोधकां, फूलकां, कंवरपुरा, पंजुआना, करीवाला, बणी व शहर के अन्य राजकीय व गैर राजकीय स्कूलों के विद्यार्थियों में 90 हजार पम्फलेट बांटकर अपने अभियान की सोच को उनके अभिभावकों तक भी पहुंचाने में कामयाब रहे हैं। इसके अलावा पानी व बिजली बचत लिखे 2 गुणा 3 मीटर साइज के 250 बैनर विभिन्न सामाजिक संगठनों को देने के अलावा सार्वजनिक स्थलों पर लगाकर लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। इतना ही नहीं रमेश गोयल ने करीब 8 माह पूर्व जिले की सभी 323 पंचायतों को भी अपने स्तर पर पत्र लिखकर ग्राम सरपंचों से आग्रह किया कि वे भी अपने स्तर पर गांव में कार्यक्रम करके ग्रामीणों को पानी की बचत के लिए प्रेरित करें। वर्ष 2010 में रमेश गोयल ने शहर में पानी की बजाए तिलक होली खेलने का आग्रह होर्डिंग्स लगवाकर आमजन को प्रेरित किया।

प्रशासन ने भी लिया संज्ञान

पिछले वर्ष मार्च 2010 में रमेश गोयल ने उपायुक्त युद्धवीर सिंह ख्यालिया को पत्र लिखकर शहर के सभी सर्विस स्टेशनों पर पानी बचत के लिए वाटर रिचार्जिंग अनिवार्य करने के आदेश जारी करने का आग्रह किया। इस कड़ी में डबवाली में जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों ने शहर में सभी सर्विस स्टेशनों के संचालकों को एक माह के भीतर वाटर रिचार्जिंग का बंदोबस्त करने के निर्देश जारी किए हैं।

जल संकट से निपटने में दे रहे अपना योगदान

रमेश गोयल ने कहा कि अखबारों से और अन्य माध्यमों से जल संकट के विषय में वे पढ़ते रहते थे। इस से उन्हें लगा कि जीवन में उन्हें भी इसको लेकर कुछ करना चाहिए। यह सोचकर उन्होंने तीन साल पहले यह अभियान शुरू किया था। इस कड़ी में वे स्कूलों के साथ-साथ पंचायतों को भी इस दिशा में कदम उठाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

17/3/11

किन्तु-परन्तु
20 मई 2009

शाबाश

रमेश गोयल

भारत विकास परिषद् के क्षेत्रीय संयोजक रमेश गोयल इस बात के लिए साधुवाद के हकदार हैं जो आजकल विद्युत और जल बचत अभियान के तहत जगह जगह जाकर जन जन में अलख जगा रहे हैं। भिन्न भिन्न स्कूलों और सामाजिक संस्थाओं में जाकर वे बच्चों एवं नागरिकों को प्रेरित करते हैं कि छोटी छोटी बातों को ध्यान में रखते हुए किस प्रकार वे विश्व की एक बहुत बड़ी समस्या बनने जा रहे पानी की बचत कर सकते हैं। उनका कहना है कि पानी के नल को बिना आवश्यकता के खुला नहीं छोड़ना चाहिए। ब्रश या शविंग करते समय नल बंद रखें, नहाते समय बाल्टी भर कर मग से नहाएं, कपड़ों को मशीन की बजाय बाल्टी में खंगालें, फर्श को कभी पाईप से न धोएं, बर्तन साफ किए हुए टब के पानी को पौधों में डालकर बचत करें, पानी की टंकी में गुब्बारा लगाएं ताकि टंकी भर जाने पर पानी बाहर न गिरे, अपने वाहन को पाईप से न धोएं, बिजली का इस्तेमाल आवश्यकतानुसार ही करें, बड़े बल्बों की बजाय सीएफएल ट्यूब का प्रयोग करें आदि आदि। इनका कहना है कि अगर पानी बचेगा तो बिजली भी बचेगी। इसके साथ साथ वो बच्चों को इस बात के लिए भी प्रोत्साहित करते हैं कि वे अपनी पुरानी बची हुई कापियों से साफ कागज निकालकर उनकी जगह नई कापियां बनाएं और इस्तेमाल करें। अगर एक बच्चा केवल एक कापी ही बना ले तो इस देश के कराड़ों बच्चों द्वारा हजारों टन कागज बचाया जा सकता है जिससे लाखों पेड़ बच सकते हैं जिससे पर्यावरण की समस्या भी कम की जा सकती है। रमेश गोयल के इस प्रयास की सर्वत्र सराहना हो रही है।

hindustantimes

htlive

Haryana, Friday, January 28, 2011, 4 Pages www.hindustantimes.com

28 January, 2011

HARY

Supermo

Conserving water is his life's mission

HT Correspondent
chdnewsdesk@hindustantimes.com

SIRSA: An environment activist, who is a lawyer by profession, has been running a relentless campaign on water conservation in this district for more than a decade.

"Saving is what I advocate, both as a lawyer (income tax) and an environmentalist with a mission to conserve water," says Ramesh Goyal.

"Even in my childhood, I was so taken up with saving that I used to tear unused pages from my previous class notebooks for the next classes to save money."

The governor goes through Ramesh Goyal's book. HT PHOTO

The environmentalist has visited almost all schools, colleges and even in distant villages, which fall in Ellenabad, Rania and Dabwali towns, spreading awareness regarding the issue to one lakh students.

"In 2001, when I read a journal I was shocked to know that less than 1% water out of 71% on earth is fit for human consumption and the rest is salty or poisonous. This served as the basis for my mission."

Having realised the importance and scarcity of potable water, he began sharing the same information with his clients, friends and others and advised them "not to adopt a casual approach towards this threat".

"As a result some of my friends also showed commitment to this mission, but the initial enthusiasm soon waned. However, I continued to spread the word."

Since then, in my spare time, I take out my car and pack its boot with brochures and leaflets and address school students on a prefixed schedule almost weekly, he added.

"School authorities react positively when they hear my 20-minute presentation on facts such as less availability of potable water on earth, why it is important to save it and 'imagining a life without water for a day' and how unintentionally we waste water daily."

Goyal, however, feels that through his seminars, public meetings and distribution of leaflets, "if a person saved a litre of water a day then lakhs of litres could have been saved up to now".

He intensified his mission in 2008 by contributing a message on saving water, energy and non-renewable resources on earth in the form of poems, couplets, anecdotes and articles.

The governor had released Goyal's booklet 'Bin Paani Sab Sun', containing information on conserving water, on September 8, 2010 at Sirsa.

Besides, from time to time, he takes part in local community radio shows to spread the message. He says it is important to save water as out of 119 zones in Haryana 108 fall in dark zones.

Hindustan Times 28th January 2011

कालांवाली में डीएवी व. मा. विद्यालय, राज० कन्या व. मा. विद्यालय तथा बिशनामल हाई स्कूल में 4 दिसम्बर 10

कालांवाली में जल बचाओ कार्यक्रम में संबोधित करते एडवोकेट रमेश गोयल।

'जल बचाओ-जीवन बचाओ' के तहत कार्यक्रम आयोजित

कालांवाली, संवाद सहयोगी : भारत विकास परिषद की कालांवाली शाखा द्वारा जल बचाओ-जीवन बचाओ अभियान के तहत डबवाली रोड पर स्थित विशनामल जैन सरस्वती विद्या मंदिर, डीएवी सीनियर सेकंडरी स्कूल, राजकीय कन्या विद्यालय में कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों के मुख्यातिथि परिषद के क्षेत्रीय मंत्री रमेश गोयल एडवोकेट थे। इस मौके पर शाखा प्रधान धर्मपाले गर्ग, हीरा सिंह, बिशनामल स्कूल प्रबंधक कमेटी के प्रबंधक डा. भीम सैन शर्मा, सुशील चचाना, संगीता कक्कड़ सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

कार्यक्रम के दौरान रमेश गोयल ने बच्चों को पानी के महत्व की जानकारी देते हुए कहा कि पानी हमारे जीवन का अभिन्न अंग है और हमें इसका सदुपयोग करना चाहिए। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के वर्ष 2009 के सर्वेक्षण के अनुसार पूरी दुनिया के एक अरब लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता। जल वैज्ञानिकों के अनुसार भूजल स्तर तेजी से नीचे गिरता जा रहा है और आने वाले समय में तीसरा विश्व युद्ध पानी के नाम पर लड़ा जाएगा। उन्होंने कहा कि बहुत से लोग यह नहीं जानते कि वे अनजाने में पानी बर्बाद करते हैं। उन्होंने कहा कि हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हम पानी को बर्बाद नहीं होने देंगे और लोगों को भी पानी के महत्व पर जागरूक करेंगे।

J 5-12-10

'जल बचत क्यों' लेख
दैनिक पल पल
29 मई 2010

जल बचत क्यों?

मनुष्य के शरीर में साइज अनुसार 55 प्रतिशत से 78 प्रतिशत पानी है। निर्जलीकरण, से बचने के लिए शरीर को एक लीटर से 7 लीटर पानी प्रतिदिन आवश्यक है जो कार्य, तापमान, वायु दबाव, आद्रता व अन्य कारणों पर निर्भर करता है। इसकी काफी मात्रा पानी के सीधे प्रयोग की बजाए भोजन व अन्य पेय पदार्थों से पूरी हो जाती है। यह स्पष्ट नहीं है कि स्वस्थ मनुष्य को कितना पानी पीना आवश्यक है जबकि अधिकांश विचारानुसार निर्जलीकरण रोकने के लिए 6-7 गिलास पानी आवश्यक है। नेशनल रिसर्च काउंसिल के फूड एंड न्यूट्रीशन बोर्ड की सिफारिश अनुसार भोजन की प्रति कलौरी के लिए एक मिली लीटर पानी की अवश्यकता होती है। यूनाईटिड स्टेट्स नेशनल रिसर्च काउंसिल की ताजा रिर्पोट अनुसार (खाद्य पदार्थों से मिले पानी की मात्रा सहित) पुरूष को 3.7 लीटर व महिलाओं को 2.7 लीटर पानी चाहिए। आम धारणा है कि जल प्रकृति की देन है और अथाह मात्रा में उपलब्ध है । ये दोनों बाते सत्य हैं ।

पानी किसी फैक्ट्री या प्रयोगशाला में नहीं बनाया जा सकता बल्कि केवल प्रकृति द्वारा ही प्रदत है और इतनी बड़ी मात्रा में उपलब्ध है कि इसमें पूरी धरती डूब जाए-सृष्टि का विनाश हो जाये। कुल धरातल के लगभग 70 प्रतिशत भाग में जल है। पानी की अधिकता के कारण ही बड़े बड़े शहर थेड़ में परिवर्तित हुए हैं । बाढ़ के समय चारों ओर पानी के कारण ही हाहाकार होता है और फिर भी बाढ से घिरे व्यक्ति प्यास के कारण छटपटाते हैं।

वर्षा होने पर नगर गांव की गलियों में पानी पानी होता है फिर भी पीने के पानी की अलग आवश्यकता होती है यानि हर प्रकार का पानी पीने योग्य नहीं है, जीवन रक्षक नहीं है । जल भू वैज्ञानिकों के अनुसार कुल उपलब्ध पानी का केवल 1 प्रतिशत से कम पानी ही पीने योग्य है यानि एक हजार लीटर में 3 से 7 लीटर पानी ही जीवन रक्षक है शेष पानी खारा व गन्दा है। पानी की महता वास्तव में उस समय पता चलती है जब हमें बहुत प्यास लगी हो और पीने का पानी आस पास उपलब्ध न हो । तब हम दो बूंद पानी के लिए ही छटपटाने लगते हैं और ऐसा लगता है कि यदि तुरन्त पानी न मिला तो हमारे प्राण संकट में पड़ जायेंगे और इसी कारण से कहा जाता है कि जल ही जीवन है । विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2004 के एक सर्वेक्षण के अनुसार पूरी दूनिया के एक अरब से अधिक लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिलता । भू व जल वैज्ञानिकों की भविष्यवाणियों के अनुसार भारत, चीन और अमेरिका जैसे देशों में अधिक जल दोहन से भू-जलस्तर में तेजी से आ रही गिरावट इस खतरे का संकेत है कि आने वाले समय में तीसरा विश्वयुद्व पानी के नाम पर ही लड़ा जाएगा ।

अधिक भू-जल दोहन के कारण हरियाणा के 118 खण्डों में से 108 खंड डार्क जोन (खतरनाक स्थिति) में आ चूके हैं। 2031 तक वर्तमान से चार गुणा अधिक पानी की आवश्यकता होगी । पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अधिक दोहन एवं प्रदूषण के चलते ही आज सभी देशों को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। पानी के लिए लड़ाई गली मोहल्ले से लेकर विभिन्न देशों तक अक्सर देखी गई है । पंजाब-हरियाणा, कर्नाटक -तमिलनाडू, हरियाणा-दिल्ली जैसे प्रांतों का पानी के लिए आपसी तनाव जग जाहिर है। भारत पाकिस्तान का रावी नदी जल विवाद अन्य विषयों के साथ तनाव का कारण है।

रमेश गोयल

29/5/10

गोयल ने लिया जल संसद में भाग

सिरसा : जूना पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर अवधेशानन्द गिरीजी के हरिद्वार स्थित हरिहर आश्रम में उनकी अध्यक्षता में अन्तर्राष्ट्रीय जल संसद का आयोजन किया गया जिसमें केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री पवन बांसल मुख्यातिथि तथा न्यायमूर्ति शम्भुनाथ श्रीवास्तव विशिष्ठ अतिथि थे । इस आयोजन में सिरसा जिला के जल बचाओ अभियान प्रणेता रमेश गोयल ने भी भागीदारी की। स्वामी अग्निवेश, कांग्रेस सांसद महाबल मिश्र, राष्ट्रीय काग्रेस पार्टी सांसद संजय पाटिल तथा भाजपा सांसद रूड़ी ने भी सम्बोधित किया। स्वामी अवधेशानन्दजी ने बताया कि जल की महता सम्बन्धी प्रथम अंतर्राष्ट्रीय जल संसद उज्जैन कुभं के समय आयोजित की गई थी जिसमें लगभग 300 जल वैज्ञानिकों व अन्य लोगों ने भाग लिया और हरिद्वार में होने वाली इस चौथी संसद में 55 देशों से जल वैज्ञानिकों ने भागीदारी करनी थी परन्तु कुंभ प्रशासन द्वारा स्वीकृति न मिलने के कारण निकट भविष्य में ही पांचवी

10 अप्रैल 2010

मेरे शहर की हस्ती एडवोकेट रमेश गोयल

23/10/1948 को एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्में श्री रमेश गोयल ने बाल्यकाल से ही संघर्षशील जीवन व दृढ़ संकल्प के सहारे कला, वाणि%य व विधि स्नातक शिक्षा स्वयंपाठी व पत्राचार के माध्यम से पूरी की। 35 वर्षों से आयकर सलाहकार के रूप में व्यवसायी तथा बिक्रीकर व आयकर ट्रिब्यूनल हरियाणा-पंजाब व दिगी तक अपील प्रतिनिधित्व करते है। आयकर बार एसोसिएशन के संस्थापक सचिव व कई बार सचिव व अध्यक्ष रहे हैं। बिक्रीकर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष, हरियाणा बिक्रीकर बार एसोसिएशन की संविधान समिति के चेयरमेन रहे तथा आल इंडिया फैडरेशन ऑफ टैक्स प्रैक्टीशनर्स के आजीवन सदस्य हैं। व्यवसायिक लेख राष्ट्रीय पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित।

विद्यालय में सर्वोतम मॉनीटर से पुरस्कृत। श्री बाल अमर समिति पुस्कालय व वाचनायल के 1967-68 में उपप्रधान तथा 1985 से 1997 तक प्रधान, जागृति के संस्थापक उपप्रधान तथा अक्तूबर 1998 से प्रधान श्री सेवा के 1982 से 1992 तक उपप्रधान व 1993 से कार्यकारिणी सदस्य महाराजा अग्रेसन मैडिकल कालेज अग्रोहा के आजीवन सदस्य हैं व 3 वर्ष कार्यकारिणी सदस्य रहे तथा दी सिरसा सिटीजन वैलफेयर फोर्म के 1993 से 2006 तक महासचिव रहे। श्री श्याम बाल भवन ट्रस्ट सिरसा के संस्थापक सचिव व ट्रस्टी श्री श्याम परिवार ट्रस्ट व श्री बाल अमर समिति पुस्तकालय ट्रस्ट, बाबा तारा चैरिटेबल ट्रस्ट सिरसा के ट्रस्टी, अराधना गोयल स्मृति पुण्यार्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष तथा मुरलीधर कांडा मेमोरियल ट्रस्ट के महासचिव हैं। 1968-69 में हरियाणा तरुण संघ के तत्वावधान में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा स्थापित करने वाले प्रमुख छः विद्यार्थियों में से एक गोयल अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक संस्था भारत विकास परिषद के संस्थापक शाखा अध्यक्ष, प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य, तीन बार प्रांतीय उपाध्यक्ष, दो वर्ष प्रांतीय अध्यक्ष्य रहे व 1-4-06 से केंद्रीय टीम में क्षेत्रीय संयोजक है। हरियाणा प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के शाखा कोषाध्यक्ष, सचिव व अध्यक्ष तथा चार वर्ष प्रांतीय संयुक्त मंत्री रहे व 1983 से प्रदेश उपाध्यक्ष है। गोयल हरियाणा प्रांत में एक मात्र व्यक्ति है जो अपना पूरा व्यवसायिक कार्य राष्ट्रभाषा हिन्दी में करते हैं। हरियाणा तरुण संघ द्वारा प्रकाशित तरुण ज्योति हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साहित्यिकी व आर.एस.डी. कालोनी की लघु साक्षात्कार पत्रिकाओं का सम्पादन व व्यवस्था की। कविता लेख व पत्र राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं। स्थानीय, प्रांतीय व राष्ट्रीय स्तर की अनेक सामाजिक धार्मिक व व्यवसायिक संगठनों में सक्रिय सदस्य व पदाधिकारी है। बाल्यकाल से ही संघर्षशील जीवन के साथ आगे बढ़ते हुए समाज व देश के लिए कुछ विशेष करने के लिए हर समय तत्पर रहते हैं और निज पर शासन फिर अनुशासन तथा दृढ़ संकल्प, निष्ठा व लगन के साथ आगे बढ़ने का प्रयास करते रहे हैं। विद्यालय काल में पुरानी पुस्तकें खरीद बिक्री से अपना शिक्षा खर्च निकालना, बाद में प्राइवेट टाइपिस्ट के रूप में काम आरंभ करते हए कलैंडर, नाम कलैंडर, नाम पट्टिका, लॉटरी टिकट का काम किया व साथ-साथ अध्ययन किया और आज एक सफल व्यवसायी व सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में प्रतिष्ठित है। आजकल स्कूल जाकर विद्यार्थियों को देश की प्रमुख समस्या पानी बिजली आदि के महत्व को समझाते हुए उदाहरणों सहित बर्बादी रोकने व बचत के उपाय बताते हैं और अब तक लगभग 30 विद्यालयों में कार्यक्रम कर चुके हैं तथा निरंतर प्रयास जारी है।

जनघोष सिरसा 8/3/2010

जल चालीसा देगी लोगों को जल बचाने की प्रेरणा

विकास यादव | सिरसा

हनुमान चालीसा की तर्ज पर जल्द ही बाजार में जल चालीसा आ रही है।

रमेश गोयल

जिस प्रकार हनुमान चालीसा में रामभक्त हनुमान की महिमा गाई गई उसी प्रकार जल चालीसा में जल की महिमा, महत्व आदि का बखान किया गया है। इसके अलावा इसमें जल बचाने के कई तरीके भी सुझाए गए हैं। जल संरक्षण अभियान को धार्मिक भावना से जोड़ने के लिए चालीसा शब्द का प्रयोग किया गया है।

जल चालीसा की रचना सिरसा की आरएसडी कॉलोनी निवासी एडवोकेट रमेश गोयल ने की है। इसकी प्रेरणा उन्हें करीब छह महीने पहले मिली जब एक धार्मिक कार्यक्रम में एक साधु ने परीक्षित प्रकरण सुनाया। परीक्षित की मौत का कारण पानी ही बना था। उसी समय रमेश गोयल ने जल चालीसा की रचना करने की ठान ली। बीते मंगलवार को एक ही दिन में उन्होंने 30 चौपाइयों वाली जल चालीसा की रचना कर डाली। रमेश गोयल की जल सरंक्षण पर यह कोई पहली रचना नहीं है। इससे पहले भी बिन पानी सब सून नाम पुस्तक की रचना कर चुके हैं। वे 2008 से जल संरक्षण अभियान को चला रहे हैं। वे स्कूल, कॉलेज आदि शिक्षण संस्थाओं में जाकर करीब डेढ़ लाख विद्यार्थियों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक कर चुके हैं। जल संरक्षण के प्रयासों के लिए उन्हें 15 अप्रैल 2011 को दैनिक भास्कर ने जल स्टार अवार्ड ने भी सम्मानित किया था।

एडवोकेट रमेश गोयल ने बताया कि जल चालीसा को जल्द ही प्रकाशित कराया जाएगा। फिलहाल मूल रचना को सिरसा के संस्कृत व हिंदी मर्मज्ञ श्रीगोपाल शास्त्री के पास संपादन के पास भेजा हुआ है। संपादन का काम पूरा होने के बाद प्रकाशन के लिए भेजा जाएगा।

जल चालीसा में जल को जीवन का आधार बताया गया है। चालीसा में बताया कि जल के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

जल है तो कल है यह जानो,
पानी के महत्व को पहचानो।
जो जन चांद पर जाकर आए,
बिन जल चांद पर रह नहीं पाए।।

इसमें पानी न होने की भयानक स्थिति को भी चित्रित करने की कोशिश गई है।

पानी के लिए लड़ते प्रदेश,
प्रदेश ही नहीं लड़ते हैं देश।
अब भी नहीं संभले प्राणी,
होगा विश्व युद्ध का कारण पानी।।

6/12/11 भास्कर

बूंद-बूंद की कीमत जानो

☞ रंग लाने लगा रमेश गोयल का जागरूकता अभियान
☞ 60 हजार बच्चों को बिजली, पानी का महत्व बताया
☞ 2008 में आरंभ किया मिशन जागरूकता

सिरसा। देश विदेश में आज सबसे बड़ा संकट जल बना हुआ है। जीवन का आधार जल ही है। विश्व स्वास्थ्य संगठनों द्वारा भी बार-बार अपनी रिपोर्ट में कहा है कि जिस तरह से जल व ऊर्जा के महत्व पर ध्यान नहीं दिया जा रहा। इसका परिणाम आने वाले समय में बहुत ही भयंकर हो सकता है। इसी संकट से लोगों को बचाने के लिए शहर के एक शख्स ने पूरे जी-जान से अभियान चलाकर लोगों में जल व ऊर्जा की बचत के प्रति जागरूकता लाने की ठान ली है। यह शख्स हैं भारत विकास परिषद के क्षेत्रीय संयोजक रमेश गोयल। रमेश गोयल ने लोगों को जल के महत्व को समझाने के लिए अभियान छेड़ा हुआ है। उनके इस जनून को इस आंकड़े से समझा जा सकता है कि उन्होंने अब तक 60 हजार विद्यार्थियों को जल व ऊर्जा के महत्व के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां देकर जागरूक किया। श्री गोयल लोगों को जल की एक-एक बूंद की कीमत के बारे में समझाने में लगे हुए हैं। उन्होंने जिला के लगभग 60 प्रतिशत विद्यालयों में जाकर शिविर आयोजित किए और बिजली व पानी के महत्व को समझाया। रमेश गोयल ने 2001 से ही बिजली, पानी जैसे अहम मुद्दों पर लेख लिखने आरंभ कर दिए थे। 2008 में उन्होंने इसे एक मिशन के रूप में ले लिया। उनके लेखों में भू व जल वैज्ञानिकों की भविष्यवाणियों के बारे में काफी महत्वपूर्ण बातें हैं जिनके अनुसार भारत, चीन और अमेरिका जैसे देशों में अधिक जल दोहन से भू-जलस्तर में तेजी से आ रही गिरावट इस खतरे का संकेत है कि आने वाले समय में तीसरा विश्व युद्ध जल को लेकर होगा। पानी के महत्व को न समझ पाने और इसके अनियमित व अधिक दोहन के चलते ही आज देश को जल संकट का सामना करना पड़ रहा है। देश के कई राज्य ऐसे हैं जहां पर स्थिति काफी खराब है। जनता जागरूकता के अभाव में यह नहीं जानती कि पानी की एक-एक बूंद का महत्व कितना अधिक है। इसी महत्व को समझाने के लिए रमेश गोयल अपने मिशन के द्वारा लोगों को जागरूक कर रहे हैं। उनके अभियान के परिणाम का ही नतीजा है कि स्कूलों की प्रार्थना सभाओं में भी बच्चों को जल व बिजली का सदुपयोग करने बारे बताया जाता है।

दैनिक समरघोष 30 जुलाई 2009

जल संचय की राह पर एक और 'भगीरथ'

सिरसा, मणिकांत मयंक

हरियाणा के कुल 119 खंडों में भी गिरते भूजल स्तर के कारण पानी की उपलब्धता को लेकर परिदृश्य धुंधलका ही नजर आ रहा है। 55 खंड डार्क जोन में हैं तो 43 में स्थिति चिंताजनक।

ऐसे में जल संचित करने तथा जल के समुचित उपभोग कर आने वाली पीढ़ी की खातिर इसकी व्यवस्था कर लेने के भगीरथ प्रयास की आवश्यकता आन पड़ी है। सरकारी व गैर सरकारी स्तर पर समेकित प्रयास की दरकार है। भारत विकास परिषद के प्रांतीय संयोजक एडवोकेट रमेश गोयल ने जल संरक्षण के लिए अनोखे अभियान का सूत्रपात किया है। अपने अभियान की शुरुआत सिरसा जिले के 70 स्कूलों से कर अब इसे उन्होंने राज्यव्यापी रंग देने की दिशा में भी कदम बढ़ा दिए हैं।

दरअसल, सिरसा के विभिन्न शिक्षण संस्थानों में इन दिनों प्रार्थना के समय पानी की एक-एक बूंद बचाने की शपथ विद्यार्थी ले रहे हैं। ये विद्यार्थी न केवल खुद शपथ ले रहे हैं बल्कि अपने परिजनों व मित्रों से भी पानी की एक-एक बूंद की कीमत का ज्ञान सांझा कर रहे हैं। दसवीं कक्षा पास कर पॉलिटेक्निक कर रहा छात्र विजय बताता है कि उसने जल संकट व जल संरक्षण की बारीकियां जान ली हैं। निश्चय ही वह अपने परिवार में छोटे-छोटे उपायों से पानी बचत के लिए परिजनों को प्रेरित करेगा। उधर इस अभियान के प्रणेता एडवोकेट रमेश गोयल बताते हैं कि उन्होंने अब तक 70 हजार से अधिक विद्यार्थियों को स्कूलों व कालेजों में जाकर पानी व बिजली की कम खपत के बारे में जागरूक किया है। उनका कहना है कि अब वह इसे प्रांतीय स्तर पर ले जाना चाहते हैं।

एडवोकेट रमेश गोयल अपने एकाकी प्रयास में जल विद्युत बचत नाम से पुस्तक को भी शामिल कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि अब तक 80 हजार विज्ञप्तियां भी आमजन में वितरित की जा चुकी हैं। अपने इस प्रयास के पीछे मूल कारणों को रेखांकित करते हुए रमेश गोयल कहते हैं कि प्रदेश में निरंतर जल स्तर नीचे जा रहा है जो निश्चय ही आने वाले दिनों में जल संकट की ओर इशारा कर रहा है। बहरहाल, स्कूलों, कालेजों व अन्य शैक्षणिक संस्थानों के जरिये पानी व बिजली की बचत की यह मुहिम क्या रंग लाती है यह तो भविष्य के गर्भ में है।

↑
विश्व जल दिवस
पर विशेष
दैनिक जागरण
22 मार्च 2010

डेरा बाबा भूमणशाह
संघर साधां में 7 जून
2009 को श्रद्धालुओं
में 4000 विज्ञप्तियां
वितरित की। बाबा
जी ने जल बचत
पर प्रकाश डाला
(नियमानुसार अन्य
व्यक्ति को बोलने
नहीं देते)
↓
भास्कर 8 जून, 2009

सहनशीलता सबसे बड़ा गहना: ब्रह्मदास

भास्कर न्यूज | डिंग मंडी

डेरा बाबा भूमण शाह संघरसाधां में पूर्णिमा उत्सव पर रविवार को सत्संग का आयोजन किया गया। इस मौके पर डेरा के गद्दीनशीन संत बाबा ब्रह्मदास महाराज ने प्रवचन किए।

श्रद्धालुओं को प्रवचन करते हुए बाबा ब्रह्मदास ने कहा कि सहनशीलता मानव जीवन का सबसे बड़ा गहना है। क्रोध पर काबू पाना चाहिए। क्रोध में आकर कभी भी कोई गलत कदम नहीं उठाना चाहिए और न ही आत्महत्या का प्रयास करना चाहिए। आत्महत्या एक घिनौना काम है। स्वामी विवेकानंद ने भी कहा था कि जब भी क्रोध आए तो एक मिनट के लिए परमात्मा को याद कर लेना चाहिए। क्रोध अपने आप शांत हो जाएगा। उन्होंने संत कबीर का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने सदा मानवता के हित में कार्य किया। इसलिए संत कबीर के बताए हुए मार्ग पर चलकर मानवता के हित में कार्य करना चाहिए।

जल है तो जीवन है

बाबा ब्रह्मदास ने जल के महत्व को बताते हुए कहा कि जल है तो जीवन है। जल बगैर जीवन असंभव है। इसलिए जहां तक हो सके जल की बचत करनी चाहिए और इंद्र देवता से बरसात के लिए फरियाद करनी चाहिए। निरंतर गिरते भू-जलस्तर के कारण भविष्य में पेयजल के लिए समय के साथ-साथ आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ेगा।

इस मौके पर बाबा ब्रह्मदास ने श्रद्धालुओं के लिए लंगर शेड का शिलान्यास किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।